मई १९४२] **देश-दर्शन** [ज्येष्ठ १९९९

देश-दर्शन

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] [संख्या ११

आस्ट्रेलिया

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

आस्ट्रेलिया दुनिया भर में सबसे बड़ा द्वीप है। समस्त महाद्वीपों में केवल आस्ट्रेलिया ही सब का सब दक्षिणी गोलार्द्ध में है और दूसरे महाद्वीपों से अलग है। यह महाद्वीप सबसे छोटा भी है। यह १० और ४० दक्षिणी अक्षांश और ११४ पूर्वी देशान्तर और १५३ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। मकर-रेखा प्रायः इसके दो समान भाग करती है। इसका क्षेत्रफल २९,७४,५८१ वर्ग मील और इसकी सबसे बड़ी लम्बाई २,४०० मील और चौड़ाई २,००० मील है।

यह महाद्वीप विषवत् रेखा के समीप तक नहीं पहुँच पाता है। दक्षिण की ओर एक विशाल समुद्र इसे अण्टार्किटक प्रदेश से भी अलग करता है। पूर्व की ओर द्वीपों से जुड़े हुये प्रशान्त महासागर ने अमरीका को आस्ट्रेलिया से ८ हजार मील दूर कर रक्खा है। दक्षिण पूर्व की ओर १,००० मील की दूरी पर न्यूजीलैंड का टापू है। पश्चिम की ओर ४ हजार मील हिन्द महासागर तय करने के बाद अफ्रीका का किनारा दिखाई पड़ता

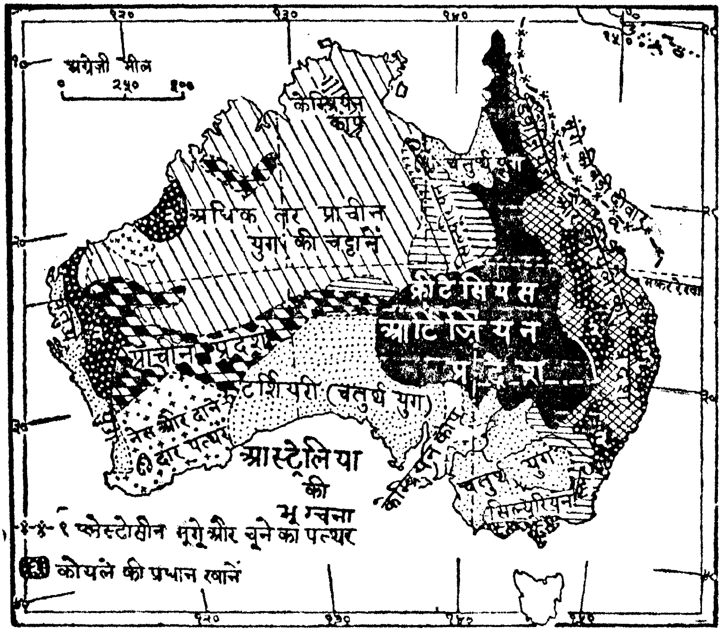
है। उत्तर की ओर उथली टारेस प्रणाली (स्ट्रेट) इसे न्यूगिनी से अलग करती है, जहां से आगे पूर्वी द्वीप समूह की टूटी हुई कड़ियां दक्षिणी पूर्वी एशिया के बीच में पुल के समान हैं। इसका तट कटा फटा न होने के कारण २,२५० मील लम्बा है।

सिडनी से स्वेज़ होकर लन्दन तक की दूरी ११५३८ मील, नेपुल्स की ६४३८ मील, याकोहामा को ४३१६ मील, सिङ्गापुर की ४३०६ मील, वैंकूवर की ६८४८ मील, सैन फ्रान्सिस्को की ६४६७ मील, पनामा की ७६६२ मील, न्यूयार्क की पनामा मार्ग होकर ६७०४ मील, आकलैण्ड की १२६४ मील है।

मेल्बोर्न से सिडनी ५७६ मील, एडीलेड ४६६ मील, होबर्ट ४४३ मील है। ब्रिस्बेन से सिडनी ४७४ मील है। एडीलेड से फ्रीमैंटेल १३५३ मील है। फ्रीमैंटेल से लन्दन स्वेज मार्ग से ६५३७ मील, नैपुल्स ७४३७ मील, कोलम्बो ३१२० मील और केपटाउन ४७०८ मील है।

भूरचना

आस्ट्रेलिया की भूमि कैम्ब्रियन चट्टानों के पहले की बनी है। यह चट्टानें आज पश्चिम और दक्षिण-



पृथ्वी की बनावट

पश्चिम की ओर भलीभांति देखी जा सकती हैं। चट्टानें मोड़दार और परतदार हैं। यह चट्टानें मोटी प्रस्तरीभूत

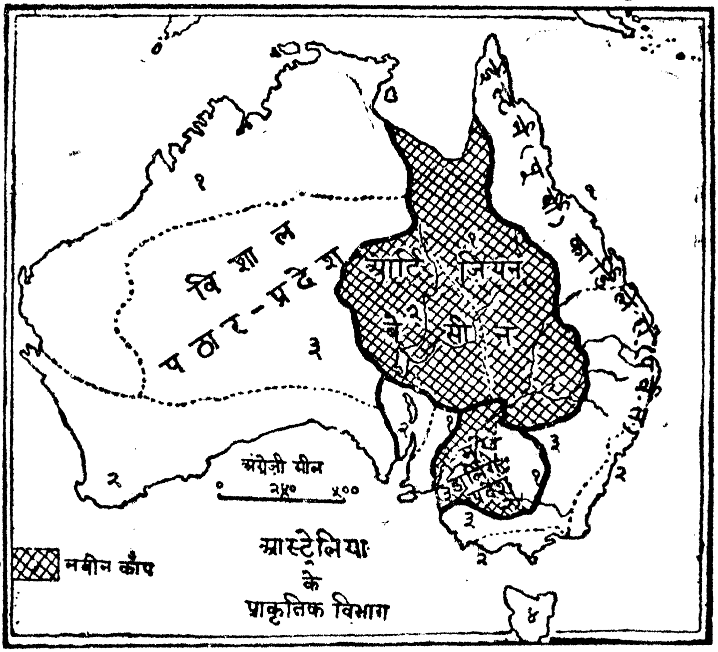
(सेडीमेंटरी) शिलाओं की पेटियों से बनी हैं। इन प्रस्तरीभूत चट्टानों के ऊपर कांप (बारीक) मिट्टी पाई जाती है। समय पाकर यह कांप तथा शिलाएँ अधिक ऊँची हो गईं और ऊपरी दबाव के कारण शिलाओं की परत टूट गई और प्रस्तर-भ्रंश (फाल्ट) बन गये हैं। कहीं कहीं पर समानान्तर दरारों के मध्य स्थान नीचे बैठ गया है और संकरी भ्रष्ट (रिफ्ट) घाटियां बन गई हैं।

प्राकृतिक बनावट के अनुसार आस्ट्रेलिया तीन भागों में बांटा जा सकता है। (१) पश्चिमी पठार (२) पूर्वी पहाड़ और (३) बीच के मैदान।

पश्चिमी पठार अत्यन्त प्राचीन चट्टानों का बना है। साधारण रूप से इस पठार की ऊँचाई दो हज़ार फ़ुट है। पर यह बिलकुल समतल नहीं है। मैकडोनल पर्वत-श्रेणी और मसग्रेव पर्वत ३ हज़ार फ़ुट से भी अधिक ऊँचे हैं। पठार के ढालू तट समुद्र से देखने पर पहाड़ की भाँति मालूम होते हैं।

पूर्वी पर्वत-श्रेणी आस्ट्रेलिया में सबसे अधिक ऊँची है। तीन हज़ार फ़ुट से अधिक ऊँचा भाग प्रायः सब का सब पूर्व की ओर ही है। इस भाग में छोटी छोटी

पर्वतीय श्रेणियाँ हैं और यार्क अंतरीप से लेकर तस्मानिया तक (पूर्वी तट) तक फैली हुई हैं। इसका सबसे ऊँचा भाग आस्ट्रेलियन अल्प्स है। यह विक्टोरिया



प्राकृतिक विभाग

में स्थित है और प्रायः बरफ से ढका रहता है। दक्षिणी पर्वतों में प्राचीन ज्वालामुखी पहाड़ और लावा के निशान

मौजूद हैं। ये पश्चिम की ओर निकले हुये हैं और दक्षिणी सागर के समानान्तर हैं। पूर्वी कार्डिलेरा की सबसे ऊँची चोटी कासि अस्को है। यह विक्टोरिया और न्यूसाउथवेल्स की सीमा पर है। इस चप्टी चोटी की ऊँचाई ७००० फुट से कुछ अधिक है। आगे उत्तर की ओर इस पर्वत की ऊँचाई डेढ़ हज़ार फुट हो जाती है पर फिर ब्लूमाउण्टेन पर्वत में ऊँचाई अधिक हो जाती है। ब्लूमाउण्टेन सिडनी बन्दरगाह को दुर्गम घाटियों और सपाट पहाड़ियों द्वारा भीतरी भाग से अलग कर देता है। इस पर्वत के उत्तर में छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। यह पहाड़ियां समुद्र तट की छोटी छोटी नदियों को मरे—डार्लिङ्ग नदी की सहायक नदियों से अलग करती हैं। कार्डिलेरा पर्वत की लिवरपुल श्रेणी ४५०० फुट न्यू इँगलैंड और मैकफार्सन श्रेणियां ५५०० फुट ऊँची हैं। क्वींसलैंड में पश्चिम से लेकर पूर्व तक पर्वतीय प्रदेश की चौड़ाई ३०० मील है। बेलेंडिनकर पर्वत की ऊँचाई साढ़े ५ हजार फुट है।

यहां की पथरीली और आग्नेय चट्टानें लावा के बहाव और ज्वालामुखी राख की तहें प्रगट करती हैं।



हाल के ज्वालामुखी—सम्बन्धी निशान केवल समुद्रतट के पास ही मिलते हैं। दूसरी नई तहों में न्यूसाउथवेल्स

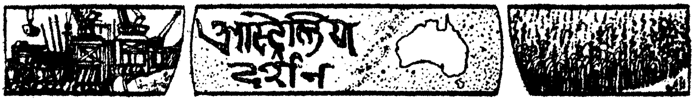


पश्चिमी आस्ट्रेलिया के प्रदेश

में हन्टर घाटी के कोयले की विशाल खानें भी शामिल

हैं। समुद्र की ओर यह टीले खड़े हैं पर भीतर की ओर क्रमशः ढालू होते गये हैं। इनके ढाल पर खड़े होकर देखने से ये पठार की भांति दिखाई पड़ते हैं। इसी कारण इनको पहाड़ कहना ठीक नहीं है। यह ग्रेट डिवाइरेंज के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस भाग की कड़ी चट्टानें नुकीली हैं पर मुलायम चट्टानें गोल हैं। तस्मानिया पूर्वी पर्वत श्रेणी का ही एक भाग है जो पठार के रूप का है। इसमें बहुत सी नदियां हैं। इसका सबसे ऊँचा भाग बेनलोमांड पांच हज़ार फुट ऊँचा है।

बीच के मैदान—ये अधिकतर ६०० फुट से कम ही ऊँचे हैं। आयर झील के निकट इनका धरातल समुद्र तल से भी नीचा हो जाता है। यह चिकनी मिट्टी की गहरी तहों से ढके हैं। इनका डूबा हुआ उत्तरी सिरा कार्पेन्ट्रिया की खाड़ी बन गया है। ये मिट्टी के मैदान अत्यन्त प्राचीन काल से बनने आरम्भ हुये थे। उस समय समुद्र सदर्न हाई लैंड्स तक फैला हुआ था। कार्डिलेरा पर्वत बहुत ऊँचा था उस पर वर्षा बहुत होती थी। वर्षा का पानी नदियों के रूप में बदल गया और नदियों ने मिट्टी और रेत लाकर तली में बिछा दिया।



जैसे जैसे पहाड़ नीचा होता गया वर्षा भी कम होती गई और नदियों के सूखने से सूखी धरती निकल आई। फिर भी नदियों की बाढ़ ने कई बार बारीक कीचड़ की तह बिछा दी।

मध्यवर्ती मैदान आस्ट्रेलिया का स्टेपी भी कहलाता है। इनके बीच में चपटी चोटी वाली पहाड़ियां हैं। यहां यूकेलिप्ट पेड़ों के कुञ्ज हैं। वर्षा ऋतु में नदियां उमड़ कर निचले भागों को बाढ़ से डुबा देती हैं और सिवार की तह को गहरा कर देती हैं। वर्षा के बाद उपजाऊ धरती में घास उग आती है जहां भेड़ें चरती हैं।

इन मैदानों के पश्चिम की ओर खारी झीलें हैं। आयर झील में भीतर को सबसे अधिक पानी आता है। यह झील समुद्र तल से ४० फुट नीची है। किसी समय यह मीठे पानी की झील थी और इसका पानी स्पेन्सर खाड़ी में पहुंचता था। वर्षा के कम होने, अधिकाधिक भाप बनने और बार्कू कूपर्स क्रीक तथा दूसरी नदियों द्वारा क्वीन्सलैंड पठार की मिट्टी बह आने से इस झील का आकार बहुत छोटा हो गया है। टारेन्स झील प्रायः सौ मील लम्बा नमक का दलदल है।

देश दर्शन

कार्पेन्टेरिया की खाड़ी और डार्लिंग नदी की सहायक मरम्बिजी के बीच के प्रदेश को प्रायः आर्टिज़ियन प्रदेश कहा जाता है। यह प्रदेश उत्तर से दक्षिण १,८७० मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम ३०० मील चौड़ा है। यह जल सोखने वाली तहों से बना हुआ है। पानी इनमें छन कर छिद्र रहित नीचे तली पर ठहर जाता है। इस प्रदेश में पाताल तोड़ कुएँ हैं जो ५,००० फुट तक गहरे हैं।

पश्चिमी पठार अत्यन्त पुराना और कड़ी चट्टानों द्वारा बना है। वर्षा और आंधी ने इसे लगभग समतल बना दिया है जिससे रेतीला और पथरीला मैदान बन गया है। अच्छे स्थानों पर यहां काँटेदार नमकीन झाड़ियां हैं। पर यहां की नदियों में बहुत कम पानी रहता है। धीरे धीरे मध्यवर्ती मैदान की ओर यह पठार सिकुड़ता जाता है। यहां मैकडोनल पहाड़ से निकलने वाली छोटी छोटी नदियां कभी कभी आयर झील में पानी ले जाती हैं।

आस्ट्रेलिया का समुद्र-तट अधिकतर चट्टानों के घिसने और टूटने से बना है। कहीं कहीं तली के उठ आने से भी स्थल का क्षेत्रफल बढ़ गया है। किसी समय यह

एक बड़ा महाद्वीप था। जिसका प्रमाण कुङ्गारू मेलनि और छोटे छोटे द्वीप देते हैं। उत्तर-पूर्व की ओर ग्रेडबेरि-अररीफ महाद्वीप की पुरानी सीमा बनाती हैं। यह रीफ संसार में जीवित मूँगों की सबसे बड़ी दीवार है। यह



८६—ग्रेटबेरियर गेफ के पानी से चुने हुये मूंगे और घोंघे। आध घंटे में यात्री वहाँ इस तरह के मूँगों का ढेर इकट्ठा कर सकता है।

टारेस जल संयोजक को घेरे हुये हैं और मकर रेखा तक पहुँचती हैं। इस रेखा के आगे पानी का तापक्रम इतना ऊँचा नहीं रहता जिसमें मूँगे का कीड़ा जीवित

रह सके। स्पेन्सर और कारपेन्ट्रिया की खाड़ियों के पास ही तट कुछ कुछ कटा फटा है। ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे ऊँची ऊँची प्रायः चूने की दीवारें चली गई हैं।

नदियाँ

आस्ट्रेलिया के तटीय मैदान बड़े संकरे हैं। इनमें होकर छोटी छोटी नदियां बहती हैं। स्वांन नदी पश्चिमी पठार के किनारे से निकल कर हिन्द महासागर में गिरती है। पूर्वी तट पर बरडेकिन, फिर, जराय, ब्रिस्बेन, हंटर तथा दूसरी नदियां तटस्थ मैदान को पार कर प्रशान्त महासागर के किनारे वाले बन्दरगाहों तक जाती हैं। इन नदियों के घाटियों में कोयला पाया जाता है। उनकी ऊपरी नदियां समकोण बनाती हुई समुद्र में गिरती हैं।

डार्लिन और उसकी सबसे बड़ी सहायक नदी कंडेमाइन को मिलाकर कुल लम्बाई तीन हजार मील है। कँडे-माइन नदी क्वींसलैंड के पहाड़ों से निकलती है और लिवर पूल श्रेणी से निकलने वाली मेक्लरे आदि नदियां आकर



विक्टोरिया प्रान्त में मेरीज़विली के पास टेबर्टी नदी का दृश्य

मिलती हैं। वर्षा के बाद इन नदियों में भयानक बाढ़ आती है। गर्मी के दिनों में यह तालाबों की लड़ी की भांति रहती हैं। ब्लू (नीले) पर्वत से लालचन और आस्ट्रेलियन आल्प्स से मरम्बिजी निकलती है। ब्लू पर्वत पर लगातार वर्षा बहुत अधिक होती है। ब्लू पर्वत पर बरफ भी पड़ती है जिससे पिघलने पर नदियों को पानी मिलता है। डार्लिंग के संगम के बाद मरे नदी खुश्क धरती होकर बहती है जिससे इसकी धारा धरती सोखने और भाप बनने से बहुत संकरी हो जाती है फिर यह अलिक्जेंड्रिया झील में होकर समुद्र में गिरती है। इस प्रकार आस्ट्रेलिया की नदियों में पानी की मात्रा बहुत कम है जिससे सिंचाई के लिये बड़ी कठिनता पड़ती है।

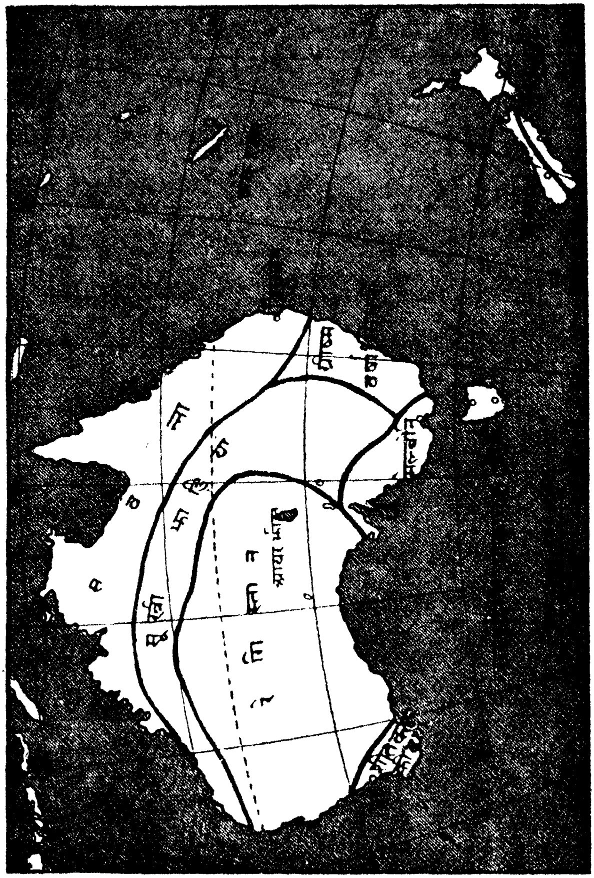


जलवायु

जलवायु तथा वर्षा

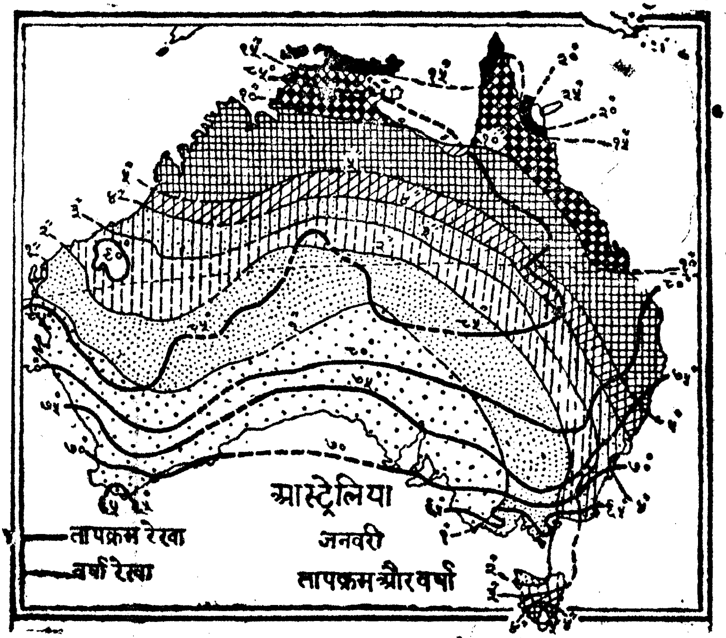
एक द्वीप होते हुये भी समुद्र का असर इसके तटों पर ही परिमित रहकर भीतरी भागों में नहीं पड़ता है। इसके दो कारण हैं। १—इसका तट कटा फटा नहीं है। २—इसके तटों पर ऊँची पहाड़ियां हैं जिससे भीतरी भागों में समुद्री हवाएँ नहीं पहुँच सकती हैं। इसलिये इसका बहुत सा भाग अत्यन्त खुश्क तथा गर्मी में अत्यन्त गरम हो जाता है। इसका उत्तरी तट विषुवत् रेखा के निकट है पर दक्षिणी तट भूमध्य सागर के अक्षांशों में स्थित है। मकर-रेखा प्रायः इसके बीच होकर जाती है। इसके उत्तर का भाग सब कहीं अत्यन्त गरम और दक्षिण का भाग साधारण गरम रहता है। आस्ट्रेलिया के भिन्न भिन्न भागों का तापक्रम अक्षांश पर उतना निर्भर नहीं करता है जितना कि उनकी ऊँचाई और समुद्र की दूरी पर निर्भर है। समुद्र के आस पास के देशों में आधी रात और दोपहर के तापक्रम में प्रायः बहुत भेद हो जाता है। आस्ट्रेलिया की जलवायु में यहां की धूप विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आकाश में बादल बहुत कम समय तक घिरे रहते हैं।

और सरदी में कुहिरे के कारण धुंधले दिन तो बहुत कम होते हैं।



आस्ट्रेलिया के जलवायु सम्बन्धी प्रदेश

जनवरी मास में यहां सबसे अधिक गरमी पड़ती है। उस समय अधिकतर भीतरी भागों का तापक्रम ८० अंश फारेन हाइट से भी ऊपर हो जाता है। जुलाई मास में

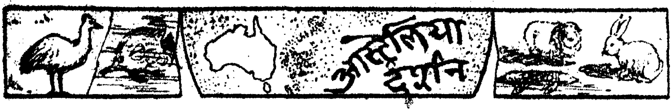


जनवरी मास का तापक्रम और वर्षा

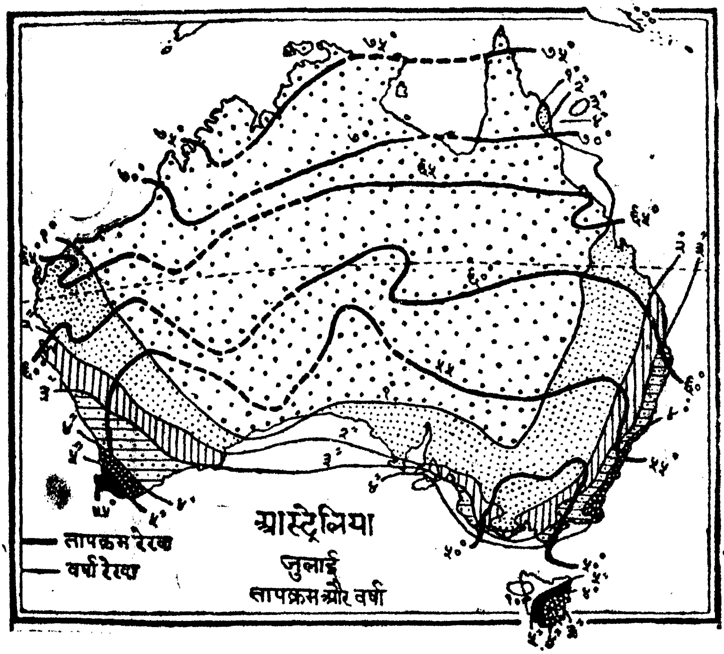
सबसे अधिक सरदी पड़ती है उस समय दक्षिणी-पश्चिमी भाग और पठारों पर कुछ सरदी पड़ती है। आस्ट्रे-लियन अल्प्स के ३ हजार फुट से अधिक ऊँचे वाले

भागों में काफी सरदी पड़ती है। सरदी की कमी के कारण ग्रीष्म काल और शीत काल के तापक्रम में बहुत कम अन्तर पड़ता है। आस्ट्रेलिया के दक्षिण की ओर ध्रुव प्रदेश में समुद्र पड़ने के कारण गरमी पड़ती है।

उत्तरी आस्ट्रेलिया में गरमी में वर्षा होती है। भीतरी भाग में गरमी बढ़ जाने से हवा का दबाव हल्का हो जाता है इसलिये भूमध्य रेखा से आने वाली हवाएँ यहां पानी बरसाती हैं। उत्तरी-पूर्वी ट्रेड हवा आस्ट्रेलिया में मुड़कर उत्तरी-पश्चिमी मानसून हो जाती हैं। शिशिर काल में सूर्य उत्तर की ओर बढ़ जाता है इसलिये हल्के दबाव का प्रदेश भी बढ़ जाता है और इन दिनों केवल उत्तरी सिरे पर ही मानसूनी वर्षा होती है। दक्षिणी-पूर्वी पठार के पूर्वी भाग में बरफ पड़ती है। तस्मानिया अधिक दक्षिण में होने के कारण सदा ही पछुआ हवा के रास्ते में पड़ता है, इस कारण वहां साल भर वर्षा होती है। पश्चिम की ओर यहां पूर्वी भागों की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है। समुद्र-तट और पठार पर औसत से सबसे अधिक वर्षा होती है। समुद्री किनारे से जितना भीतर की तरफ जाइये वर्षा कम होती जाती

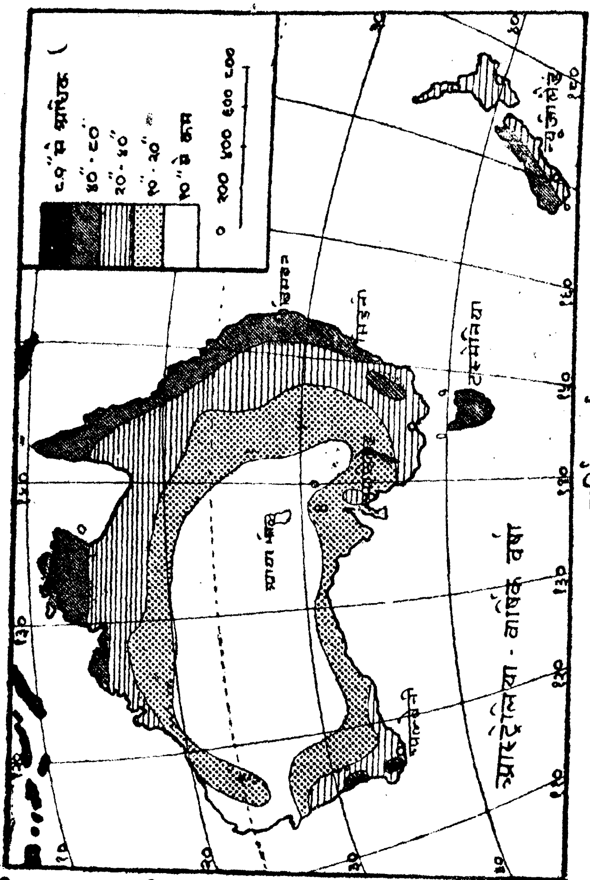


है। पूर्वी-पठार में समुद्री ढालों पर ४० इंच पानी बरसता है। पठार के दक्षिणी-पश्चिमी सिरों पर ३०

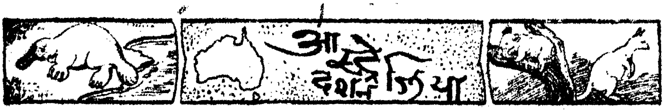


जुलाई मास का तापक्रम और वर्षा

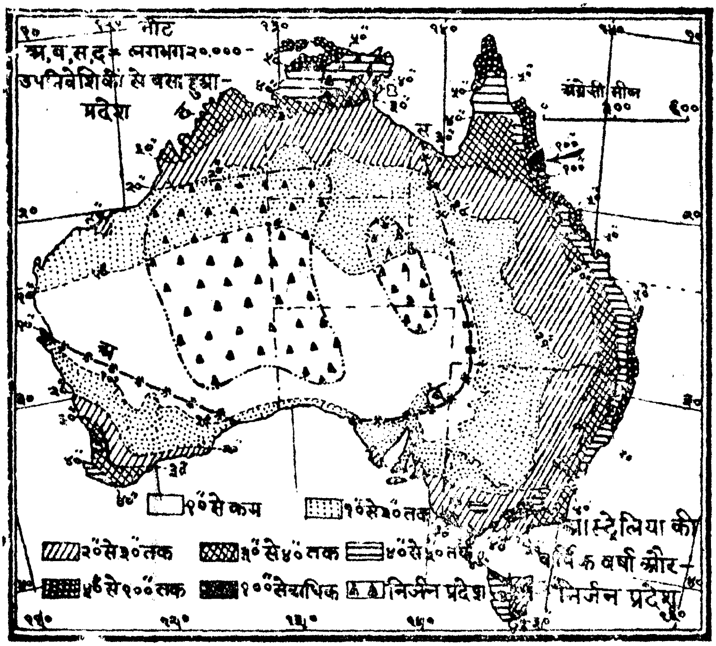
इंच के ऊपर पानी बरसता है। उत्तर की ओर सबसे अधिक चौड़े प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है वहां मानसूनी हवाएँ छः महीने पानी बरसाती हैं। तापटी



पर्वत, फ्लिंडर्स श्रेणी और आस्ट्रेलियन अल्प्स में समीपवर्ती भागों से अधिक पानी बरसता है।



आस्ट्रेलिया के एक बड़े भाग में १० इंच से भी कम पानी बरसता है। यहां का सूखा प्रदेश पश्चिमी



वार्षिक वर्षा और निर्जन प्रदेश

तट तक फैला हुआ है। यह भाग गरमी के मौसिम में पानी बरसने वाले उत्तरी भाग को जाड़े के मौसिम में पानी बरसने वाले दक्षिणी भाग से अलग करता है।

देश दर्शन

आस्ट्रेलिया में वर्षा की कमी के कारण भारतवर्ष की भांति कभी कभी साल भर तक अकाल नहीं पड़ता है क्योंकि भिन्न-भिन्न भागों में तीन पृथक हवाओं (मानसून, ट्रेड और पछुआ) से वर्षा होती है।

इस प्रकार जलवायु की दृष्टि से आस्ट्रेलिया का महाद्वीप चार भागों में बांटा जा सकता है। १—उत्तरी मानसूनी प्रदेश २—पूर्वी डच पठार ३—दक्षिणी या भूमध्य सागरीय प्रदेश और ४—भीतरी प्रदेश।

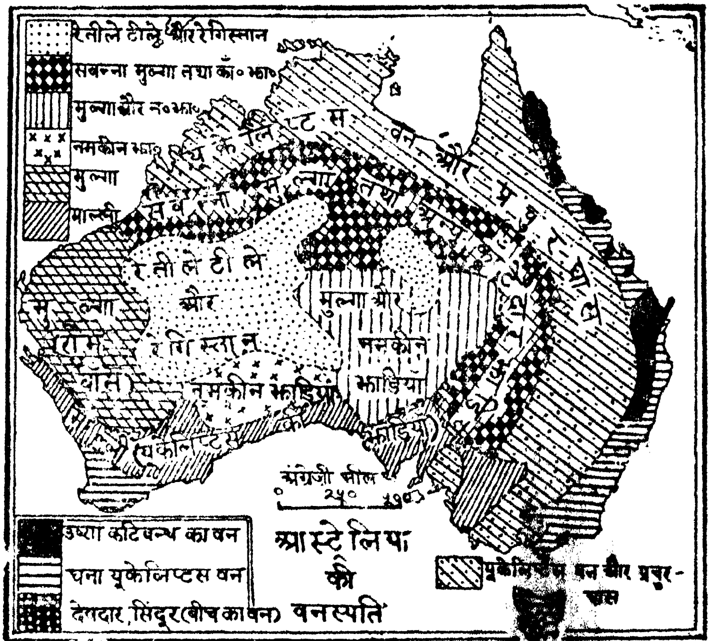
आस्ट्रेलिया के इस चौथे जलवायु के प्रदेश में पानी बहुत कम बरसता है। ग्रीष्म ऋतु में बहुत गरमी पड़ती है। पर जाड़े के दिनों में भी साधारण गरमी पड़ती है। यहां खुश्क हवा के कारण दिन में एकाएक गरमी बढ़ जाती है और रात को खूब जाड़ा पड़ने लगता है इसी कारण इस भाग के दिन और रात के तापक्रम में बड़ा अन्तर पड़ जाता है।

बनस्पति

बनस्पति के अनुसार आस्ट्रेलिया तीन भागों में बांटा जा सकता है। १—रेगिस्तान या अर्ध रेगिस्तान २—घास वाला प्रदेश ३—बन प्रदेश।

रेगिस्तान या अर्ध रेगिस्तान—यह प्रदेश महाद्वीप के मध्य या पश्चिम में है। यह पूर्ण रूप से रेगिस्तान नहीं है। क्योंकि यहां अनियमित रूप से कुछ न कुछ वर्षा सब कहीं हो जाती है। यहां के पौधों को नमी रोकने के लिये तरकीबें करनी पड़ती हैं। कुछ पौधे अपने पत्तियों के किनारे सूर्य के सामने कर लेते हैं। कुछ की पत्तियाँ चमड़े के समान होती हैं। कुछ तेल बहा कर जमा कर लेते हैं और कुछ पानी की खोज में अपनी जड़ों को बहुत गहराई तक फेंक देते हैं। इस प्रकार की बिरली छोटे कद की बनस्पति को कटीली झाड़ी या स्क्रब कहते हैं। माली-स्क्रब कुरूप छोटे यूकेलिप्टस की झाड़ी होती है। यह दो-तीन गज़ बड़ी होती है और बड़ी सघन उगती है। इसके बन बड़े दुर्गम होते हैं। दक्षिणी आस्ट्रेलिया और विक्टोरिया के हजारों वर्ग मील ऐसे ही सघन बनों से घिरे हैं। विक्टोरिया के त्रिमरा जिले में यह कटीली झाड़ी बेलन द्वारा कुचल कर जला दी

गई और फिर वहां गेहूँ के लिये सुन्दर खेत तयार किये गये। इसी प्रकार गेहूँ की खेती के लिये अच्छे २ खेत तयार किये जा रहे हैं।



वनस्पति

स्पिनीफेक्स झाड़ी साही के कांटे के समान पत्ते वाली घास बड़ी भयानक होती है। इससे घोड़ों के पैर

और टांगों में ऐसा घाव पैदा हो जाता है कि फिर उनके दुःख का अन्त करने के लिये लोगों को उन्हें मार ही डालना पड़ता है। सख्त मुँह वाले ऊँट भी इस घास को नहीं खा सकते हैं।

मल्गास्कब घास रामबांस की तरह होती है। मार्ग चलने वाले इससे बहुत डरते हैं क्योंकि इसकी जटिल झाड़ों में, छोटे छोटे कांटों में यात्री के कपड़ों और शरीर की बुरी दशा हो जाती है।

घास के प्रदेश—यह पठारों और उनके पास वाले भीतरी भागों में पाये जाते हैं। समुद्र के पास वाले प्रदेश बगीचे के स्थान हैं। भीतर की ओर बढ़ते बढ़ते खुले हुये घास के मैदान हैं। यहां के कुछ पौदों और घास को भेड़-बकरी, गाय और बैल बड़े चाव से खाते हैं। इनमें कंगारू घास और नमकीन चट्टानों पर उगने वाली नमकीन घास प्रसिद्ध हैं।

ग्रेटडिवाडिंग श्रेणी के पूर्वी प्रदेश में लम्बी और खुरदरी घास होती है जो भेड़ों और गायों के लिये बड़ी उपयोगी है। पश्चिम की ओर चोटी पर भेड़ों के लिये बड़ी सुन्दर घास उगती है। आस्ट्रेलिया की लगभग

आधी भूमि उम्दा घास से घिरी है। न्यूसाउथ वेल्स में नमकीन झाड़ियों की अधिकता है। क्वींसलैंड में कई तरह की घासें मिलती हैं जा बड़े बड़े अकाल को सह लेती हैं और थोड़ी भी वर्षा होते ही एकदम बढ़ आती हैं।

बन समुद्र तट के पास मिलते हैं जहां पानी अधिक बरसता है। उत्तर के बन उष्ण कटिबन्ध की भांति आर्द्र बनों में उगने वाले गोरन (मैनग्रोव) और दूसरे भांति भांति के पौधे पाये जाते हैं। यहां के वृक्ष दूसरे देशों के वृक्षों से भिन्न हैं। पूर्वी बनों में यूकेलिप्टस पेड़ की कई जातियां मिलती हैं। आस्ट्रेलियन अल्प्स में हंसराज (दी फर्न्स) बड़े पेड़ों के नीचे उगते हैं। जारी कारी और दूसरे उपयोगी लकड़ी के वृक्ष पश्चिमी आस्ट्रेलिया में उगते हैं।

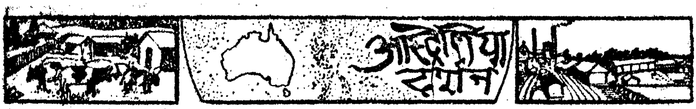
यूकेलिप्टस, गोंद के पेड़, रामबांस और अंटकटारे आस्ट्रेलिया के आदर्श वृक्ष हैं। गोंद देने वाले वृक्षों की ११५ भिन्न-भिन्न जातियां हैं। इनमें बहुत से पेड़ संसार के और दूसरे देशों में नहीं पाये जाते हैं। नीले गोंद वाले यूकेलिप्टस से तेल निकालते हैं। विक्टोरिया और केलिफोर्निया का पेपरमेंट पेड़ संसार में सबसे

बड़ा पेड़ पाया जाता है। समुद्र तट से १५ मील की दूरी तक यह पेड़ पाया जाता है। इसकी लकड़ी सख्त और टिकाऊ होती है। कूटने पर पेपरमेंट की गंध निकलती है। इनके सत से एक प्रकार का तेल उबाल कर तयार किया जाता है जो बीमारी में काम आता है।

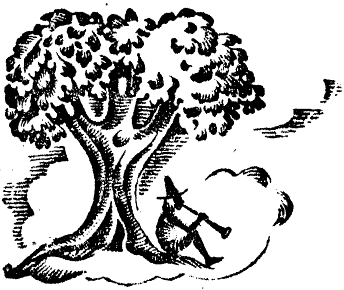
यूकेलिप्टस की एक जाति का नाम जारा है। जारा-वृक्ष पश्चिमी आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। इसकी लकड़ी बड़ी मूल्यवान होती है। इसके अच्छे मोटे पेड़ की ऊँचाई ६० से १०० फुट तक होती है। इस पेड़ के सर्वोत्तम वन समुद्र से २० से ३० मील की दूरी तक मिलते हैं। लोहमयी और पथरीली धरती को पेड़ अधिक पसंद करता है। धरती जितनी ही उजाड़ होती है (जहां कि और कोई वनस्पति न उग सके) उतनी ही इसके बढ़ने और फलने फूलने के लिये उपयोगी होती है। इसके पेड़ का मूल्य लकड़ी के कड़ापन और टिकाऊ-पन पर निर्भर है। जारा खास तौर पर सड़क मढ़ने, खम्भे, घाट, पुल, नाव, रेलगाड़ी और दूसरे सामान बनाने के काम आती है। इसका कोयला भी बहुत अच्छा होता है।

कारी जाति का यूकेलिप्टस पश्चिमी-आस्ट्रेलिया में होता है। यह बड़े डील-डौल का होता है। इसका पेड़ सीधा होता है। डालियों का नाम भी नहीं होता है और आकाश से बातें करता है। सड़क की फर्श के लिये कारी की लकड़ी जारी से भी अच्छी होती है। इसके नीचे पशुओं को ठहरने के लिये छाया नहीं मिल सकती है।

घास के पेड़ का तना बड़ा खुरदरा होता है। चोटी पर पत्तियों का जमाव होता है जिसमें फूल होते हैं। कुछ में से राल निकलती है। काले रामशांस से एक प्रकार की छाल निकलती है जो चमड़ा तयार करने के काम आती है। इस प्रकार पेड़ों का अभाव होने से इनके लगाने का काम बढ़ रहा है। तस्मानिया की बनस्पति आस्ट्रेलिया की ही भांति है। यहां अकाल नहीं पड़ता और न रेगिस्तान ही है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में ह्वानपाई नाम का देवदारु पौदा होता है जिसकी लकड़ी से जहाज बनाये जाते हैं। इसके सिवा आस्ट्रेलिया में ताड़, ब्रेड, फ्रूट, केला, सीडर, शरीफा, हंसराज, नील, अदरख, काली मिर्च, अखरोट और मसाले आदि के पेड़-पौधे भी उगते हैं।



क्वीन्सलैंड में उष्ण प्रदेश के जंगल साफ कर डाले गये हैं और धरती खेती के काम आने लगी है। यहां ईख की खास फसल होती है। ईख की फसल नदियों की तराई में होती है। यहां मजदूरों की कमी है। गोरे लोग यहां काम नहीं कर सकते और काले को आने नहीं देते। सब वनों में भेड़ें चरती हैं यही कारण है कि उत्तरी किनारे साफ और बसे नहीं हैं। डाउन्स में गेहूं और फल को खेती होती है। न्युसाउथ वेल्स का रिवरोना जिला बड़ा उपजाऊ है। विक्टोरिया और दक्षिणी आस्ट्रेलिया के भूमध्य सागरी कटिबन्ध में अंगूर खूब होता है जिससे शराब बनाई जाती है।





पशु-पत्ती

आस्ट्रेलिया द्वीप को प्राचीन काल से ही समुद्र ने संसार के और दूसरे बड़े महाद्वीपों से अलग कर दिया था इसी कारण यहां ऐसे पशु-पक्षी पाये जाते हैं जो संसार के और दूसरे देशों में नहीं मिलते हैं। कंगारू को छोड़ कर घास चरने वाले और दूसरे बड़े जानवर यहां नहीं पाये जाते हैं। यहाँ का सबसे बड़ा हिंसक मांसाहारी पशु डिंगो है। यह भेड़िये की भांति एक बड़ा कुत्ता होता है। तस्मानिया में एक और दूसरे भाँति का भेड़िया होता है। बनों में बहुत से जानवर हैं जो पेड़ों पर रहते हैं। उड़ने वाली गिलहरी और आपूसम गोंद के पेड़ों पर पाये जाते हैं। इनकी खाल के लिये इनका शिकार किया जाता है।

बृक्ष-कंगारू, बृक्ष-सर्प, बृक्ष-मेंढक और स्लाथ की भांति पत्तो खाने वाला रीछ भी पेड़ों पर ही जीवन व्यतीत करता है। तोते भी बहुत प्रकार के पाये जाते हैं। उत्तरी बनों में फलाहारी चमगादड़ मिलते हैं।

भीतरी खुले मैदानों और कटीले भागों में चरने वाले जानवर पाये जाते हैं।

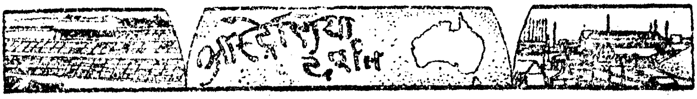


आस्ट्रेलिया के पशु

कंगारू एक अजीब पशु है जो केवल यहां ही पाया जाता है। इसके पिछले पैर बहुत लम्बे होते हैं। इसकी पूँछ बड़ी मज़बूत होती है। इस प्रकार की बनावट से इसे छलांग मारने में बड़ा सुभीता होता है फिर भी पालतू कुत्तों की सहायता से इसका शिकार किया जाता है। यह पशु अपने बच्चे को अपनी पेट की थैली में लिये रहता है। वलभी पशु के पेट में भी बच्चा रखने की थैली होती है।

आस्ट्रेलिया में बिना पंख के पक्षी पाये जाते हैं। इस भांति की दो एमू और केसोवरी खास चिड़ियां हैं। एमू पक्षी शुतुर्मुर्ग से टक्कर लेने वाला पक्षी है। इसके पख बड़े मुलायम होते हैं। आवाज़ भी सुरीली होती है। केसोवरी पक्षी कौवे की भाँति होता है इसका रंग हरा-भूरा होता है। जबड़ा मोटा और चोंच बड़ी और मज़बूत होती है। यह वनों में सांप को पकड़ कर उसका सिर काट कर फेंक देता है। यह मनुष्य की भाँति हंसता है। बोवर और मेनूरा पक्षी भी यहाँ है।

यहाँ बिल में रहने वाले जानवरों की भरमार है। ये कीड़े, मकोड़ों, गोबरीलों, जड़ों और पत्तियों पर



अपना जीवन निर्वाह करते हैं। बिल में रहने वालों में चूहा, बम्बैर और कंगारू-चूहा प्रसिद्ध हैं। आस्ट्रेलिया में विलायती चूहे लाये गये हैं। चूहों की संख्या बहुत बढ़ गई है और उनसे खेती को बड़ी हानि पहुँच रही है।

आस्ट्रेलिया के पशुओं से मांस या नमदा बहुत कम मिलता है। रेगिस्तानी भाग में बोझ ढोने के लिये ऊँट पाला जाता है।

बतख की भांति चोंच वाला प्लैटीपस भी एक अजीब पशु है। इसके मोटी मुलायम ऊन होती है। इसके पञ्जे वाले पैर जालीदार होते हैं। इसके गालों में थैली होती है। यह पक्षी की भाँति अंडा देता है। इसके अंडे का छिलका मुलायम नहीं होता है। यह अपने बच्चों को स्तनधारी जीवों की भाँति दूध पिलाता है। पक्षी वर्ग में काला हंस बड़ा प्रसिद्ध है। कबूतर, बगुला, टिटिहरी, पँडकी आदि बहुत हैं। रेंगने वाले जानवरों में छिपकिली प्रसिद्ध है। यह कई भाँति की होती है और मैदानों में एक या दो गज़ लम्बी छिपकिली पाई जाती है।

क्वीन्सलैण्ड और आस्ट्रेलिया के दूसरे भागों में मगर मिलता है। साँप इतने अधिक होते हैं कि इनके काटने के विषय में स्कूल में शिक्षा दी जाती है।

आस्ट्रेलिया में लगभग १०० क़िस्म की मछलियाँ पाई जाती हैं। मोकाड मछली सब से अच्छी मछली मानी जाती है। इसका वज़न लगभग सवा मन होता है। एक मछली के गलफड़े के स्थान में फेफड़े होते हैं। कुछ मछलियाँ तैरने के बजाय दौड़ती या कूदती हैं। ये पानी में तो रहती हैं पर घास, दाना खाती हैं। ये ब्रिस्बेन नदी के दक्षिण में बहुत कम मिलती हैं। इनकी कमाई हुई खाल बड़ी उपयोगी होती है। खरगोश भी बहुत हैं।

अब आस्ट्रेलिया में योरुप से लाई हुई भेड़ों की अधिकता है। क्वीन्सलैण्ड में सब से अधिक भेड़ें हैं। भेड़ों से ऊन बहुत मिलता है। गाय, बैल आदि पालतू पशु भी पाले जाते हैं।

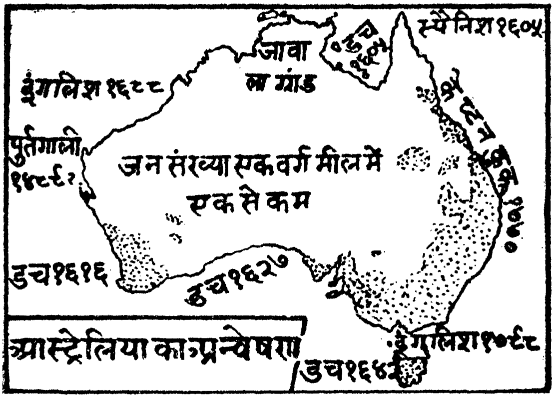
संक्षिप्त इतिहास

यह निश्चय करना बड़ा कठिन है कि आस्ट्रेलिया की खोज सबसे पहले किसने की परन्तु चीनियों के पक्ष में कुछ प्रमाण अवश्य हैं कि तेरहवीं सदी में उन्हें आस्ट्रेलिया का कुछ ज्ञान प्राप्त था। मलय निवासी भी आस्ट्रेलिया के उत्तरी भाग के सम्बन्ध में जानते थे क्योंकि तेरहवीं सदी में जब मोराकोपोलो ने पूर्वी देशों का भ्रमण किया तो उसने संकेत किया था कि दक्षिण की ओर एक बड़ा महाद्वीप है। एक बड़ा नक़शा जो हेनरी सप्तम को दिया गया था उसमें टेरा आस्ट्रेलिया का वर्णन आया है वह मानचित्र अब भी इङ्गलैण्ड में मौजूद है।

आस्ट्रेलिया की खोज

१५०३ ई० में फ्रान्सीसी मल्लाह बिनोट पाल्मीर सिमारे डे गोने बिल्ले का जहाज प्रतिकूल हवा के कारण भटक गया और उसने दक्षिण की ओर एक बड़ा द्वीप देखा था लोगों की धारणा है कि जिस बड़े द्वीप को उसने देखा था वह मेडेगास्कर रहा होगा। कुछ फ्रान्सीसी लेखकों का अनुमान है कि १५३१ ई० में प्रोवेन्स के गुईलौमे लेटेस्त् नामक व्यक्ति ने आस्ट्रेलिया

की खोज की थी। १५६७ ई० में डच ऐतिहासिक वीटफ्लीट नामक व्यक्ति ने तारा-आस्ट्रेलिया का वर्णन किया था और बतलाया था कि यह सबसे दक्षिणी द्वीप है उसने उसका न्यूगिनी से कुछ सम्बन्ध रखने का



आस्ट्रेलिया का अन्वेषण

वर्णन भी किया था और कहा था कि यदि उसकी खोज भलीभाँति की जावेगी तो वह संसार का पाँचवाँ महाद्वीप गिना जावेगा।

सत्रहवीं सदी में स्पेन के राजा फिलिप तीसरे ने गालाओ से (पेरू) से एक खोज करने वाला दल



भेजा कि वह दक्षिणी महाद्वीप की खोज करे। उस दल के साथ तीन जहाज थे। उसका मुख्य मल्लाह डेक्वीरोस और सेनापति डे तोरेस था। यह दल २१ दिसम्बर १६०५ ई० को गालाओ से चला और उसने एस्पिरीट् सौराटो नामक द्वीप का पता लगाया। बीमारी और अविश्वास के कारण मल्लाहों तथा सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और दल को मेक्सिको लौट आना पड़ा। उसके बाद डे तोरेस फिलीपाइन की ओर गया और वह न्यूगिनी तथा आस्ट्रेलिया की मध्यवर्ती खाड़ी से निकला था उसने आस्ट्रेलिया के उत्तरीतट को अवश्य ही देखा होगा। डेतोरेस ने लौटकर स्पेन के राजा से कहा कि तेरा आस्ट्रेलिया की खोज के लिये कुछ लोग भेजे जावें परन्तु आज्ञा मिलने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

डच लोगों की खोज—आस्ट्रेलिया की धरती पर सबसे पहले योरुपीय लोगों में डच लोग थे। १६०६ डाईफकेन या डोवे नामक व्यक्ति जावा से जहाज पर चला और कार्पेण्टेरिया की खाड़ी में प्रवेश करके कीरवीर अन्तरीप पहुँचा। उस जहाज के कुछ मल्लाह

आस्ट्रेलिया के तट पर गये परन्तु वहाँ के निवासियों के भय के कारण उन्होंने कुछ खोज न की। उसके बाद ५० वर्ष तक डच मल्लाहों ने आस्ट्रेलिया के उत्तरी और दक्षिणी-पश्चिमी तट की खोज की और आर्नहीम लैण्ड तथा लीनविन आदि नाम तटीय स्थानों के उन्होंने रक्खा। १६६५ ई० में डच लोगों ने पश्चिमी तट का एक मामूली चार्ट बनाया और आस्ट्रेलिया के मुख्य प्रदेश का नाम न्यू हालैण्ड (नया हालैण्ड) रक्खा। डच लोगों ने तस्मानिया द्वीप की खोज की और टस्थान नामक खोज करने वाले के नाम पर ही उस द्वीप का नाम टस्मानिया पड़ा है।

डच लोगों के बाद अँग्रेज़ पहुँचे और १६८८ ई० डाम्पीर नामक ने आस्ट्रेलिया द्वीप देखा। १६९९ ई० में वह फिर भेजा गया। उसने दोबारा शार्क की खाड़ी से डाम्पीर द्वीप समूह तक और वहाँ से रोयबक खाड़ी तक के लगभग ९०० मील लम्बे तट की खोज की। १६९६ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपना दल भेजा कि न्यूहालैण्ड के पश्चिमी तट पर वह जाकर १२ वर्ष पूर्व खोये हुये डच जहाज का पता लगावे। इस खोज

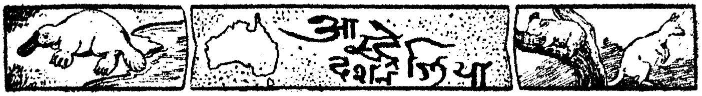


करने वाले दल ने रोटनेस्ट द्वीप की खोज की और स्वाम नदी का पता लगाया।

१७६७-७० ई० तक कैप्टनकुक की प्रथम यात्रा हुई थी। उसने अपनी यात्रा के लिये "इण्डीवर" नामक जहाज लिया। यह जहाज ३७० टन का था। जहाज में २० या २२ बन्दूकें थीं। ६ अक्तूबर १७६९ ई० को कुक ने न्यूज़ीलैण्ड के तट को देखा और कुक दो दिन के बाद यावर्टी खाड़ी में उतरा। १९ अप्रैल १७७० ई० को पश्चिम की ओर चलकर उसने आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट को देखा जिसे अब रेवरार्ड की अन्तरीप कहते हैं। उसके बाद २८ अप्रैल १७७० ई० को बोटानी खाड़ी का पता लगाया। इस खाड़ी के तट पर कुक ने अपने जहाज का लङ्गर डाला और देखा कि वहाँ के कुछ निवासी भोजन बना रहे हैं। जहाज ठहरने और उतरने की उन लोगों ने कुछ भी परवाह न की थी इस लिये कुक का साहस आगे बढ़ने को हुआ लेकिन उन लोगों ने सङ्केत से कुक और उसके साथियों को चले जाने के लिये कहा। इन लोगों ने पानी के लिये संकेत किया। इस पर उन लोगों ने भाले खींच कर मारे उससे

कुक के किसी साथी को चोट नहीं लगी। इन लोगों ने भी गोली चलाई और दो तीन बार गोली मारने पर एक के चोट लगी थी। बाद को वह भाग गये थे। उनके घर जाकर कुक ने बच्चों के घर के एक कोने में छिपा पाया था। उसने बच्चों को कपड़े आदि फेंक दिये थे और भालों का एक बड़ा गट्ठर उठा लाये थे। तट छोड़ने के पहले कैप्टन कुक ने वहाँ ब्रिटिश अधिकार प्राप्त करने के लिये यूनियन जैक (अँग्रज़ी झंडा) फहराया था।

उसके बाद कुक उत्तर की ओर अपना जहाज लेकर गया और जैक्सन बन्दरगाह पर पहुँचा और उसका नामकरण किया। उसके बाद ब्रोकेन खाड़ी और दूसरी खाड़ियों तथा अन्तरीपों में होता हुआ वह मोरेटन बे पहुँचा। उसके बाद कुक बस्टाई, केपेल और इनलेट खाड़ियों में गया। उसके बाद १३०० मील की यात्रा सरलतापूर्वक करने के बाद एक दिन यकायक इंडीवर जहाज उथले पानी में चला गया और चट्टान से टकरा गया जिससे बन्दूकें और बहुत सा सामान समुद्र से डूब गये। बड़ी कठिनाई से जहाज एक नदी के



मुहाने पर लगाया गया जिसका नाम जहाज के नाम पर ही कुक ने इंडीवर नदी रक्खा। उसी के समीप अन्तरीप भी है जिसका नाम कुक ने ट्रिबुलेशन रक्खा। जिस प्रदेश का कुक ने भ्रमण किया था उसका नाम उसने न्यूसाउथ वेल्स रक्खा। उसके बाद केप पार्क का नामकरण उसने किया और फिर और अधिक उत्तर की ओर खोज करने के पश्चात् एक स्थान का नाम उसने पाजीशन द्वीप रक्खा। उसके बाद वह हिन्द महासागर और टोरेस प्रणाली के मार्ग से इङ्गलैण्ड लौट गया।

कुक ने अपनी दूसरी समुद्री यात्रा १७७२ ई० में आरम्भ की। इस बार उसने रेजोल्यूशन और अडवेञ्चर नामक जहाजों का प्रयोग किया था और न्यूज़ीलैण्ड का पता लगाया। १७७७ ई० में कुक अटलांटिक और प्रशान्त-महासागर के मध्य उत्तर-पूर्व की ओर मार्ग ढूँढ़ रहा था तो वह फिर तस्मानिया और न्यूज़ीलैण्ड पहुँच गया।

१७७० ई० में कुक ने विश्वास किया था कि तस्मानिया एक द्वीप है। बाद को उसने अपना विश्वास बदल दिया था।

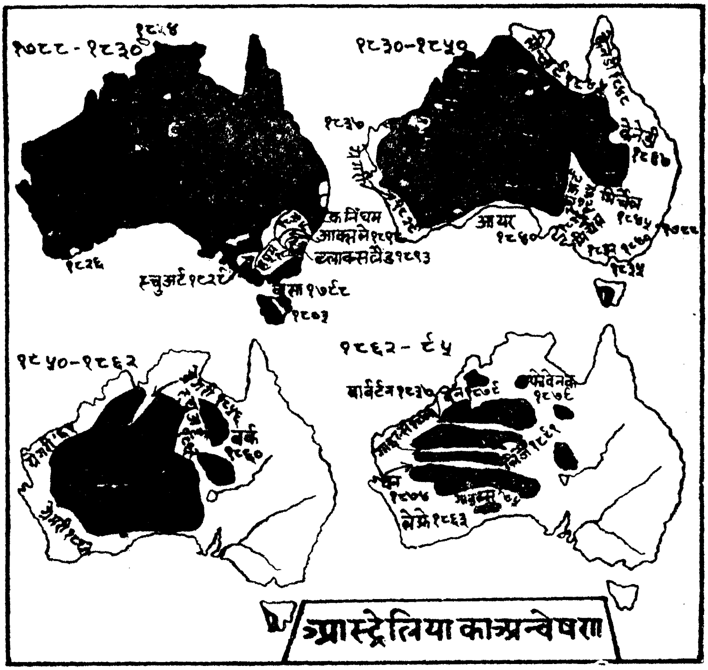
१७८८ ई० में बोटानी बे में एक ब्रिटिश बस्ती बसाई गई और इस प्रकार आस्ट्रेलिया के इतिहास का श्रीगणेश हुआ।

भीतरी खोज

लगभग २५ वर्ष तक सिडनी से लगभग ७० मील उत्तर और इतना दक्षिण की बीच वाले प्रदेश के ही सम्बन्ध में जानकारी कर सके। आगे भीतर की ओर वह पर्वतीय श्रेणी के कारण बढ़ ही नहीं सके। १८१३ ई० में ब्लेक्सलैण्ड, लसोन और बेंटवर्थ नामक व्यक्तियों ने एमू के मैदान में नेपीन नदी को पार किया और डिवाइडिंग पर्वतीय श्रेणी पर चढ़े और उन्होंने फिश नदी की घाटी को देखा। उसके बाद मैक्वारी नदी तक सड़क बनाई गई और बार्थस्ट नगर की नींव डाली गई। इस प्रकार आस्ट्रेलिया के भीतरी भागों पर अधिकार करना आरम्भ हुआ। उसके बाद लचलान की खोज की गई।

१८१६ ई० में लेफ्टिनेन्ट आक्सले आर-एन, इवान्स और अलान कनिंघम लचलान की खोज करने के लिये पश्चिम की ओर बढ़े परन्तु नदी का पूर्ण रूप से

पता न लगा सके। उसके बाद कैप्टन किंग ने तीन यात्राओं में उत्तरी-पश्चिमी तट का पता लगाया और



आस्ट्रेलिया का अन्वेषण

मेलबिल्ले द्वीप कुछ समय के लिये बसा दिया गया। १८२३ ई० में अक्सले मोरेटोन खाड़ी और कर्टिस

बन्दरगाह पहुँचा और ब्रिस्बेन नदी का पता लगाया और नाम रक्खा। ठीक उसी समय हमिल्टन ह्यूम और होवेन जार्ज झील से चले मुरम्बजी नदी पार किया और आस्ट्रेलियन अल्प्स होते हुए ह्यूम नदी पर पहुँच गये। उन्होंने मूरे नदी को अल्बरी स्थल पर पार किया और फिलिप बन्दरगाह से खोज पार्टी पश्चिमी तट पर चले और जीलाग के स्थान पर पहुँचे। उसके बाद दो वर्ष के भीतर ही लिवरपोल के दोनों ओर की खोज पूर्ण हो गई।

१८२८ ई० में सर राल्फ डार्लिङ्ग ने कैप्स चार्ल्स स्टर्ट खोज करने के लिये भेजा। उसने एक बड़ी नदी देखी जिनसे बहुत सी दूसरी नदियाँ आकर मिलती हैं। उसने उस बड़ी नदी का नाम डार्लिङ्ग नदी रक्खा। मुरम्बजी और मूरे नदियाँ भी डार्लिंग में मिलती हैं। तीनों की लम्बाई कई हज़ार मील है।

१८३१ ई० में सर थामस मिकेल ने डार्लिङ्ग और ईटें की खोज की और १८४० ई० में स्पेंसर खाड़ी से किंग जार्ज साउण्ड तक के बड़े आस्ट्रेलियन बाइट तट



की खोज की। उसके बाद उसने स्पेंसर खाड़ी के भीतरी प्रदेश और दूसरे प्रदेशों की भी खोज की।

१८४४ ई० में डा० ली चार्ट विक्टोरिया बन्दरगाह से मोरेंस खाड़ी तक स्थल मार्ग ढूँढ़ने के लिये निकला। इस यात्रा में उसने डाबसन मेकेंज़ो का पता लगाया और फिर कार्पेन्टेरिया खाड़ी में पहुँचा। कुछ दूर तट का भ्रमण करने के बाद उसने अलीगेटर नदी से अर्न-हीम लैण्ड पार किया और ३००० मील की यात्रा तय करने के बाद विक्टोरिया बन्दरगाह पहुँच गया। १८४८ ई० में वह फिर भीतर की ओर खोज करने गया परन्तु फिर लौट कर नहीं आया।

उसके बाद बड़े-बड़े महानुभावों ने आस्ट्रेलिया के भिन्न-भिन्न भागों की खोज की जिसमें स्टुअर्ट, बर्क और विल्स के नाम उल्लेखनीय हैं। १८७५ ई० के बाद खोज करने वालों की सूची बहुत बढ़ जाती है। कई एक छोटी-छोटी खोजें सोने के लिये की गईं। १८८९ ई० टीटकिन, १८९१ ई० में लिंडसे, १८९६ ई० में वेल्स और हूबे और १८९६-९७ ई० में डेविज कार्नेजी ने अपनी अपनी खोजें कीं।

जुलाई १८६६ ई० में डेविड कार्नेजी ने कूलगार्डी और किम्बर्ले के मध्य सामान ले जाने के लिये मार्ग की खोज में गया। ८ महीने में उसने ५० मील की यात्रा की परन्तु कोई सुविधापूर्ण मार्ग न मिल सका।

राजनैतिक इतिहास

आस्ट्रेलिया के प्रान्तों में न्यूसाउथवेल्स सबसे प्राचीन है। १८२५ ई० में तस्मानिया का एक अलग प्रान्त बनाया गया। १८११ ई० में विक्टोरिया का राज्य स्थापित किया गया। १८६० ई० में पश्चिमी आस्ट्रेलिया प्रान्त एक अलग राज्य बनाया गया। १८३७ ई० में दक्षिणी आस्ट्रेलिया और १८५६ ई० में क्वीन्सलैण्ड का अलग प्रान्त बनाया गया।

सिडनी के आरम्भिक गवर्नर १७८८ ई० से जल अथवा स्थल सेना के अफसर होते थे। उनके आधीन एक किला कुछ क़ैदी और कुछ स्वतंत्र निवासी रहते थे। जनरल मैक्वारी की आधीनता में १२ वर्ष के भीतर काफी उन्नति हुई। सड़कें और पुल बनाये गये और भीतरी भाग को प्रवेश करने के लिये एक मार्ग बनाया गया। उस समय जनसंख्या ३० हज़ार थी जिसमें तीन



चौथाई क़ैदी थे। १८०३ ई० में जान मेकार्थर ने अच्छी ऊन देने वाली भेड़ें वहाँ लाकर पालीं। भेड़ों से आस्ट्रेलिया को बड़ा लाभ हुआ। आज यहाँ करोड़ों की संख्या में भेड़ें हैं। १८३१-३७ ई० तक रिचर्डबर्क गवर्नर रहा। उसके समय में लैजिस्लेटिव कौंसिल बनी।

मिल्बोर्न यारा-यारा नदी के तट पर १८३५ ई० में कुछ झोंपड़ों द्वारा बसाया गया था। १८४० ई० में वहाँ ६ हज़ार निवासियों का नगर बन गया। समस्त ज़िले की संख्या गीलांग और पोर्टलैण्ड नगरों को लेकर १२८५० थी। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया के प्रान्तों ने धीरे-धीरे उन्नति की और दिन प्रति दिन करते जा रहे हैं।

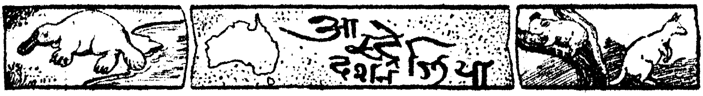
आस्ट्रेलिया की कामनवेल्थ १९०१ ई० में बनी। इसमें पश्चिमी आस्ट्रेलिया क्वीन्सलैण्ड, साउथ (दक्षिण) आस्ट्रेलिया, न्यू-साउथ वेल्स, विक्टोरिया और तस्मानिया शामिल हैं।

गत महायुद्ध में आस्ट्रेलिया ने बहुत बड़ा हाथ बटाया था। आस्ट्रेलिया ने ३,२९,८८३ सैनिक दूसरे देशों में लड़ने के लिये भेजे थे जिसमें से चोट और

बीमारी से ५६,३०२ व्यक्ति मरे। १,६६,८१६ गैस तथा गोलियों की चोट से मरे और ८७,६२७ बीमार हो गये थे। १८२७ ई० तक पेंशन और भत्ता लेकर कुल १६ करोड़ पौंड का धन आस्ट्रेलिया ने युद्ध सम्बन्धी कार्य में व्यय किया था।

सन् १६१० ई० और १६११ ई० में आस्ट्रेलिया के विधान में कुछ परिवर्तन किये गये। आस्ट्रेलिया को राष्ट्र संघ में भी स्थान दिया गया और कुछ मैंडेटेड द्वीप आस्ट्रेलियन कामनवेल्थ की संरक्षता में रक्खे गये। उसके बाद आवश्यकतानुसार आस्ट्रेलियन विधान में समय समय पर परिवर्तन होते रहे।

२५ अक्तूबर १६३६ ई० को घोषणा की गई कि नवम्बर १६३६ ई० में लार्ड गोवरी के स्थान पर केएट के ड्यूक आस्ट्रेलिया के गवर्नर-जनरल बनेंगे। नवम्बर १६३८ ई० में मिस्टर ल्योन्स के मन्त्री मंडल का पुनः संगठन किया गया। मेकलाघलन सेनेटर के स्थान पर मिस्टर ए० जी० केमरोन पोस्टमास्टर जनरल बनाये गये और ब्रिगेडियर जी० ए० स्ट्रीट डिफेन्स (रक्षा) मंत्री और मिस्टर थार्वी सिविल तथा हवाई कार्य के



मंत्री हुये। मिस्टर जे० ए० पर्किन्स व्यापार तथा कर मंत्री नियुक्त हुये। प्रधान मंत्री ने एक भीतरी मंत्री मंडल भी बनाया जिसके मिस्टर ल्योन, सर इयर्लेपेग, मिस्टर मेन्ज़ीस, मिस्टर हॉज, मिस्टर कैसी, मिस्टर थार्वी और मि० ब्रिगेडियर स्ट्रीट सदस्य हैं।

आस्ट्रेलिया को विदेशों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखना पड़ता है। आस्ट्रेलिया राष्ट्रसंघ और इंगलैण्ड की नीति पर काम करता है। जब चीन और जापान का युद्ध छिड़ा तो आस्ट्रेलिया में बेचैनी हो गई। जापान के विरुद्ध आस्ट्रेलिया में जापान विरोधी आन्दोलन हुये और जापानी माल का वहिष्कार किया गया। आस्ट्रेलिया प्रशान्त महासागरीय देशों में शान्ति स्थापित रखना चाहता था। आस्ट्रेलिया ने राष्ट्रसंघ की बैठक और ब्रूसेल्स की नव-शक्ति सम्मेलन में भी भाग लिया और जापान का विरोध किया।

सितम्बर १९३९ ई० में जब इंगलैण्ड ने जर्मनी पर युद्ध घोषणा की तो आस्ट्रेलिया ने भी घोषणा कर दी। आज आधुनिक महासमर में आस्ट्रेलिया मित्र राष्ट्रों के साथ धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध कर रहा है।

देश दर्शन

वर्तमान महासमर में आस्ट्रेलिया ने युद्ध सामग्री तथा सेना भिन्न भिन्न युद्ध क्षेत्रों में भेजी है। आस्ट्रेलिया के सैनिकों ने बेल्जियम, फ्रांस, उत्तरी अफ्रीका, यूनान और क्रीट के युद्ध में भाग लिया है।

जब जापान ने अपना आक्रमण आरम्भ किया तो आस्ट्रेलियन सेना मलय प्रायद्वीप को भेजी गई। आस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री ने खुले शब्दों में इंगलैण्ड तथा अमरीका से कहा कि यदि मलय प्रायद्वीप की रक्षा ठीक तौर पर नहीं की जाती तो फिर आस्ट्रेलिया और भारत वर्ष दोनों भारी खतरे में पड़ जावेंगे। शायद आस्ट्रेलियन प्रधान मन्त्री की बातों पर कम ध्यान दिया गया और उसका परिणाम यह हुआ कि मलय भी ब्रिटेन के हाथ से चला गया। सिंगापुर पर जब जापानी अधिकार हुआ तो १५ हज़ार आस्ट्रेलियन सेना गिरफ्तार की गई, आज आस्ट्रेलिया की स्थिति बड़ी खतरनाक है और जापान अपना मुँह फैलाये उसे हड़पने को उसके द्वार पर तयार खड़ा है।



खनिज सम्पत्ति

आस्ट्रेलिया में खनिज सम्पति खूब पाई जाती है। प्रधान खनिज सम्पत्ति का व्योरा इस प्रकार है।

सोना—१६०३ ई० में आस्ट्रेलिया में २४ करोड़ ४५ लाख रुपये का सोना निकाला गया था। जो समस्त संसार के निकाले गये सोने का २४'४ प्रतिशत था। १६०३ ई० के बाद सोने की मात्रा कम होने लगी और १६२६ ई० में केवल ३ करोड़ ३० लाख का सोना निकाला गया था जो समस्त संसार के उस वर्ष निकाले गये साने का केवल ३ प्रतिशत था। आस्ट्रेलिया से १६२६ ई० तक में ६ अरब ३७ करोड़ ५० लाख का सोना निकाला गया। पहले विक्टोरिया की खान में सबसे अधिक सोना निकलता था परन्तु अब पश्चिमी आस्ट्रेलिया की खान में सबसे अधिक सोना निकलता है। क्वीन्सलैण्ड की खान से भी सोना निकाला जाता है। न्यूसाउथ वेल्स और विक्टोरिया की घाटियों में सोना मिलता है। क्वीन्सलैण्ड और तस्मानिया में तांबे से सोना निकाला जाता है। १६२४ ई० में आस्ट्रेलिया की सोने की खानों में ६५०० मजदूर काम करते थे।

चाँदी—आस्ट्रेलिया में समस्त संसार की लगभग ५ प्रतिशत चांदी निकाली जाती है। १६२६ ई० में यहां ७ करोड़ ५० लाख रुपये की चांदी निकाली गई थी। सबसे अधिक चांदी न्यूसाउथ वेल्स में निकलती है। ब्रोकेन हिल्स में चांदी, लोहा और जस्ता एक साथ पाया जाता है। यरांडेरे में भो चांदी निकाली जाती है तस्मानिया के जीहान, ल्येल और मैगनेट आदि स्थानों में चांदी मिलती है। क्वीन्सलैण्ड और माउन्ट ईसा की खानों से चांदी निकाली जातो है। माउन्ट ईसा की खान का पता १६२३ ई० में लगा है। दक्षिणी-आस्ट्रेलिया में भी चांदी के डले मिले हैं।

जस्ता—ब्रोकेन हिल, तस्मानिया के उत्तरी पश्चिमी खनिज-भूमि और क्वीन्सलैण्ड में जस्ता निकलता है।

टीन और ताँबा—तस्मानिया में उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम, हीम्सकिर्क और बिस्चोप पर्वत, न्यूसाउथ वेल्स और क्वीन्सलैंड के स्तानथोर्प, हर्बर्टन और चिलागोये स्थानों में निकाला जाता है।



लोहा—आस्ट्रेलिया के लोहे के डले का ठीक-ठीक तौर पर अंदाज़ नहीं लगाया जा सका है परन्तु अनुमान किया जा सकता है कि वहां की खानों में लगभग ५० करोड़ टन लोहा मौजूद है। पश्चिमी आस्ट्रेलिया, उत्तरी भूमि, तस्मानिया, क्वीन्सलैंड, दक्षिणी आस्ट्रेलिया, न्यूसाउथ वेल्स और याम्पी साउंद में लोहे की खानें पाई जाती हैं।

कोयला—आस्ट्रेलिया की खानों में लगभग एक खरब ६५ अरब टन कोयला मौजूद है। सबसे अधिक कोयला न्यूसाउथ वेल्स के पेर्मो-कार्बोनीफेरस की खान से निकलता है। कोयले की सुगमता के कारण आस्ट्रेलिया में नये नये कारखाने बढ़ रहे हैं।

न्यूसाउथ वेल्स में सिडनी के आसपास १५००० वर्ग मील में कोयले की खानें फैली हुई हैं। सबसे अधिक प्रसिद्ध और उत्तम कोयला मेटलैंड-सेस्नोक के क्षेत्र से निकाला जाता है। न्यूकैसिल की खान अब खाली हो चली है। इलावाड़ा की खान बुल्ली के चारों ओर तटीय प्रदेश में है। लिथगोव की खान सिडनी से ६० मील की दूरी पर है। १६२४ ई० में इन खानों से सबसे

अधिक (१ करोड़ १६ लाख टन) कोयला निकाला गया था। १६१५ ई० में रिवेरीना में एक कोयले की खान का पता लगा अब वहां काम लगा हुआ है। क्वींसलैंड के तटीय प्रदेश से भी कोयला निकलता है।

इप्सविच, डार्लिङ्गडाउन्स, बुर्रमक्रेटेसियस का मुलायम कोयला केवल रेल चलाने के काम आता है। कड़ा कोयला डावसन नदी, ब्लेयरअथोल में पाया जाता है।

विक्टोरिया में दक्षिणी जिप्सलैंड में कोयला निकलता है। वहां से १६२६-२७ ई० में ६ लाख टन कोयला निकला था। मार्वेल की भूरे कोयले की चट्टान की मोटाई ७८० फुट है। यह संसार की भूरे कोयले की सब से बड़ी खान है।

पश्चिमी आस्ट्रेलिया में इर्विन नदी और कोली में कोयला निकलता है। तस्मानिया में कई स्थानों में कोयला है परन्तु लेक्रीक में सब से अधिक निकलता है।

इनके सिवा आस्ट्रेलिया में और दूसरी वस्तुएँ तथा खनिज सम्पत्ति मिलती हैं। वहाँ हीरे जवाहिरात भी निकलते हैं परन्तु वह देश से बाहर नहीं जाते हैं इसी लिये उनकी बहुत कम खोज की जाती है।

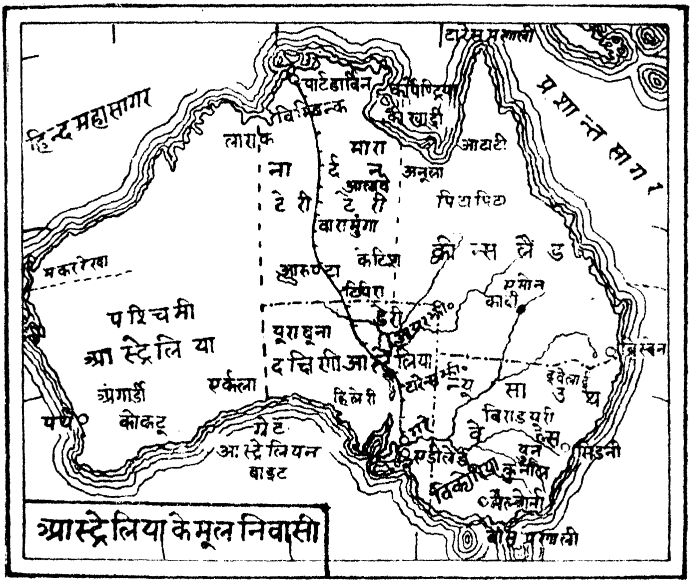
निवासी

मूल निवासी

आस्ट्रेलिया एक बड़ा महाद्वीप है। इसके भिन्न भिन्न भागों की जलवायु तथा धरती की बनावट भी भिन्न है। इसी कारण यहाँ भिन्न प्रकार के लोग निवास करते हैं।

आस्ट्रेलिया के मध्यवर्ती भाग में अरुन्ता जाति के लोग रहते हैं। इस जाति के लोग पाँच फुट साढ़े पाँच इंच के लगभग ऊँचे होते हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से लगभग ४ इंच छोटी होती हैं। साधारण रूप से इनके सीने ३६ इंच चौड़े होते हैं। उनका चेहरा यहूदी जाति की भाँति होता है; नाक कुछ गोलाकार तथा काफी चौड़ी होती है। लड़ाकू लोग नाक में एक पिन लगाते हैं। इनका रंग काला होता है। मनुष्यों की अपेक्षा स्त्रियाँ कुछ कम काली होती हैं। बच्चों का रंग तो और भी कम काला रहता है परन्तु जैसे जैसे वह बढ़ते हैं उनका रंग अधिकाधिक काला होता जाता है। उनका बाल गहरे भूरे रंग का होता है। बाल में वे गेरू मिट्टी साधारण रूप से लगाते हैं। इसलिये उनके बाल के रंग का ठीक रूप से पता लगाना असम्भव है। वे अपना सिर कभी

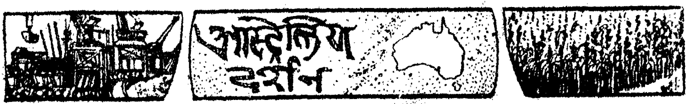
नहीं मुँड़वाते हैं। बुढ़ापे में कुछ लोगों के समस्त शरीर में बाल ही बाल दिखाई पड़ने लगते हैं। वे अपनी डाढ़ी



आस्ट्रेलिया के मूल निवासी

खूब बढ़ाते हैं। वे अपने शरीर को भांति भांति के चिन्हों और दाग़ों से सजाते हैं।

आस्ट्रेलियन लोगों के पैर की लम्बाई लगभग १० इंच होती है। पैर का अँगूठा और तालू बड़ा मज़बूत होता है। अँगूठा के सहारे वे अपने भालों को घास पर



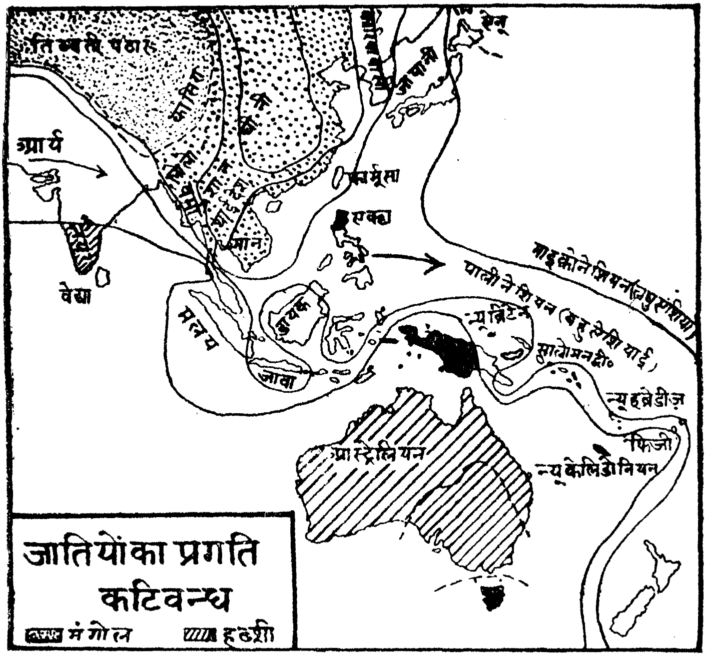
घसीटते चलते हैं। पथरीली भूमि में वह बड़ी सरलता से चल और दौड़ सकते हैं।

योरुपीय जाति के आगमन के कारण आस्ट्रेलिया के मूल निवासी अधिक दक्षिण की ओर चले गये थे। दक्षिणी आस्ट्रेलियन लोगों की आँखें बड़ी काली होती हैं। विक्टोरिया के निवासी मध्यवर्ती लोगों की अपेक्षा अधिक छोटे होते हैं। परन्तु एक बार एक मनुष्य की ऊँचाई ६ फुट ८ इंच नापी गई थी। मर्दों के शरीर का वज़न १३७ पौंड और स्त्रियों का ११५ पौंड के लगभग होता है।

दक्षिणी क्वींसलैंड में काबी जाति के लोग रहते हैं। आस्ट्रेलियन निवासी काला रंग अधिक पसन्द करते हैं। इसी कारण जो व्यक्ति जितना अधिक काला होता है उसका उतना ही अधिक मान होता है।

कुछ आस्ट्रेलियन निवासी सुडौल शरीर वाले होते हैं। उनका मस्तक कम चौड़ा, बराबर, गोला और ऊँचा होता है। उनकी नाक भी छोटी और सीधी होती है। होंठ पूर्ण तथा पतले होते हैं। वे देखने में अच्छे मालूम होते हैं।

यार्क अन्तरीप के यौरकाना लोग पापुवा जाति से मिलते जुलते हैं। पापुवा जाति का वर्णन न्यूज़ीलैंड में हो चुका है। आस्ट्रेलियन निवासियों के शरीर से एक



प्रकार की गंध निकलती है जो हम लोगों या दूसरे देश के निवासियों के गंदे-मैले शरीर की गंध से भिन्न होती है। कुछ लोगों का कहना है कि यह गंध गंधक से

मिलती जुलती है। जब आस्ट्रेलियन निवासी पालतू पशु के पास पहुँचते हैं तो वह पशु उनकी गंध के कारण परेशान होने लगते हैं।



आस्ट्रेलिया के मूल निवासी

आस्ट्रेलियन लोगों के पाँव के चिन्ह योरुपीय-आस्ट्रेलियन से भिन्न होते हैं। उनके एँड़ी का चिन्ह पतला और पंजे का चौड़ा गहरा होता है। मध्यवर्ती भाग अजीब टेढ़ा होता है।

उनकी स्त्रियाँ ३५ वर्ष में ही बूढ़ी हो जाती हैं

और यदि डाढ़ी की पहचान न हो तो मनुष्य तथा स्त्री एक ही सूरत के हो जाते हैं।

प्राचीन जाति के लोगों की जनसंख्या कुल ५५ हज़ार है। योरुपीय जाति के लोगों की संख्या लगभग ६७ लाख है। योरुपीय लोगों के सिवा अमरीकन, जापानी, मलय और चीनी लोग भी रहते हैं। सफेद चमड़े वालों ने काले लोगों को मार डाला जिससे उनकी संख्या कम हो गई। योरुपीय संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है और अब आस्ट्रेलिया अंगरेज़ों का उपनिवेश रह गया है।

भाषा

संसार के भिन्न भिन्न देशों में जो भी भाषा प्रयोग की जाती है उसे समस्त देश के लोग प्रयोग करते हैं। भाषा के शब्दों की संख्या होती है और व्याकरण भी होती है। आस्ट्रेलिया की भाषा अजीब है। वहाँ जितने वर्ण पाये जाते हैं उतनी ही भाषाएँ भी हैं।

आस्ट्रेलियन भाषाओं में फ, ह, थ, ब, स, ज़ वर्णों का वर्णमाला में नाम भी नहीं है। र का प्रयोग भी



बहुत कम होता है। न्यूसाउथवेल्स की वर्णमाला में अ, ब, ड, ए, इ, क, ल, म, न, न्ग, ओ, प, र, ट, य, व आदि वर्ण पाये जाते हैं।

क्रिया का उनकी भाषा में अजीब प्रयोग है। एक और बहुवचन क्रिया का प्रयोग करना प्रयोग करने वाले और सुनने वाले पर निर्भर है। अंक की गणना भी वहाँ भिन्न प्रकार से की जाती है। ५ अंक को वे 'बुलां गोडरा, बुलां गोडेरा, नूलू नोबुन' अर्थात् दो, दो, एक कहते हैं। इसी प्रकार दूसरे अंकों का प्रयोग करते हैं। बड़ी संख्या के लिये संकेतों का प्रयोग है।

आस्ट्रेलिया की भाषाओं में शब्द बहुत कम होते हैं इसी कारण भिन्न भिन्न जातियों की भाषायें थोड़े समय में ही बदल जाती हैं। चिट्ठी-पत्री का काम संकेत द्वारा होता है जो लकड़ी के डंडे पर बना कर भेजे जाते हैं।

उत्तरी भाग की भाषा दक्षिणी भाग से भिन्न है। दक्षिणी भाग की भाषा में शरीर के भिन्न भागों के नाम यह हैं। डा या वा (मुँह), त्यालाना (जिह्वा), मुर्दे (हाथ), न्गामा (सीना), डारा (जांघ), डीना

(पैर), गुना (गोबर) इत्यादि। परन्तु इस भाषा में ल और र नहीं होते हैं।

दक्षिणी भाषा के तीन खास भाग हैं :—(१) मध्यवर्ती और उत्तरी मध्यवर्ती, (२) दक्षिणी-पश्चिमी, (३) पूर्वी तट की भाषा (४) नरीनगेरी, (५) विराड-जूरी—कामीलारूई, (६) वाइविनकूरी, (७) विक्टोरिया भाषा आदि। इन भाषाओं के भी भिन्न भिन्न भाग हैं।

अंग्रेज़ों ने समस्त आस्ट्रेलिया में एक भाषा स्थापित करने का प्रयत्न जारी किया है। वह समस्त लोगों को अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। प्राइमरी शिक्षा मुफ्त दी जाती है फिर भी यहाँ की प्राचीन भाषा को मिटाना कठिन है।

संकेत-भाषा का प्रयोग भी आस्ट्रेलिया में बहुत होता है। संकेत का प्रयोग वहाँ आवश्यक भी है क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपनी जाति को छोड़ कर यदि किसी दूसरी जाति के मध्य में चला जाता है तो वह शत्रु माना जाता है और गोली से मार दिया जाता है। अपने को शान्तिमय सिद्ध करने के लिये उसे हरी टहनी दिखानी पड़ती है। लड़ाई करने का संकेत डाढ़ी को मुँह तक

लाकर बिखेर देना और पैर के अँगूठे से आगे की ओर उछालना है।

यदि किसी को कुछ सुनने के हेतु बुलाना होता है तो दाहिने हाथ को कान तक ले जाते हैं। कौवे के लिये हाथ की दो उँगलियों को फैला कर पंजे की भांति बनाना होता है। इसी भांति और दूसरे संकेत होते हैं।

कलाकौशल

आस्ट्रेलिया में कारबार की अधिकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहाँ जनसंख्या तो कम है परन्तु धरती और खानें अधिक हैं। खानों से जो धातु निकाली जाती है उसमें दूसरी धातें भी मिली रहती हैं। प्रत्येक धातु के अलग और साफ करने के कारखाने खोले गये हैं। बहुत से ऐसे कारखाने खानों के पास ही स्थित हैं परन्तु अलग अलग स्थानीय कारखाने भी हैं। इन कारखानों में हज़ारों लोग काम करते हैं।

बनों में लकड़ी काटने का काम भी यहाँ होता है। आधुनिक रूप से १९२७ ई० में कानबेरा से बन के कारबार का आरम्भ हुआ। समस्त आस्ट्रेलिया

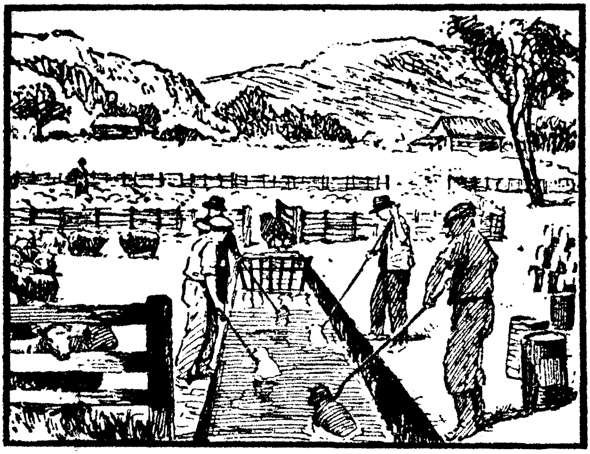
३८,३०० वर्गमील में है। बनों की लकड़ी काटी जाती है और सख़्त लकड़ी जहाज आदि बनाने के काम आती है। लकड़ी के चीरने का काम लकड़ी चीरने वाले कारखानों में होता है। कुछ लकड़ी तथा घास से लुगदी बनाई जाती है जिससे कागज़ तयार किया जाता है। दक्षिणी आस्ट्रेलिया और न्यूसाउथ वेल्स में बादामी कवर कागज़ बनाने के लिये १९२४-२५ ई० में ३३ हज़ार एकड़ बन लगाया गया है। आस्ट्रेलिया की लकड़ी से बहुत सुन्दर छपाई का कागज़ तयार हो सकता है। जंगल से गोंद निकाला जाता है और वह लन्दन भेजा जाता है।

चन्दन की लकड़ी भी दूसरे देशों को जाती है। १९२५-२६ ई० में आस्ट्रेलिया से चीन को लगभग ३५ लाख का चन्दन भेजा गया। लकड़ी से मेज़ कुर्सी और घरेलू प्रयोग की दूसरी वस्तुएँ तयार की जाती हैं।

मछली पकड़ने का काम भी यहाँ होता है परन्तु इस ओर लोगों का ध्यान अभी कम आकर्षित हुआ है यद्यपि इस कारबार में बहुत कुछ उन्नति की जा सकती है। न्यू साउथ वेल्स और विक्टोरिया में मछली पकड़ने का काम अधिक होता है।



आस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध उद्यम पशु पालना और भेड़ों का चराना है। आस्ट्रेलियन कामन वेल्थ की ५६ प्रतिशत भूमि चराई के लिये प्रयोग की जा सकती है। इस उद्यम से आस्ट्रेलिया को अपनी



ऊन कतरने के पहले भेड़ों को अच्छी तरह नहलाया जाता है

समस्त आय का २८ प्रतिशत आय है। इससे एक अरब पौंड की आय है। यदि इसी में डेरी की भी आय मिला दी जाय तो इस उद्यम से आस्ट्रेलिया को अपनी समस्त आय का ३६ प्रतिशत आय होती है। वर्षा समय पर न होने के कारण इस रोज़गार को बड़ा

धक्का पहुँचता है और इसी कारण करोड़ों की संख्या में भेड़ें मर जाती हैं। १६२८ ई० में आस्ट्रेलिया में एक अरब भेड़ें थीं। भेड़ों से जो वस्तुएँ प्राप्त होती हैं उससे प्रति वर्ष आस्ट्रेलिया को ५० या ६० करोड़ पौंड की

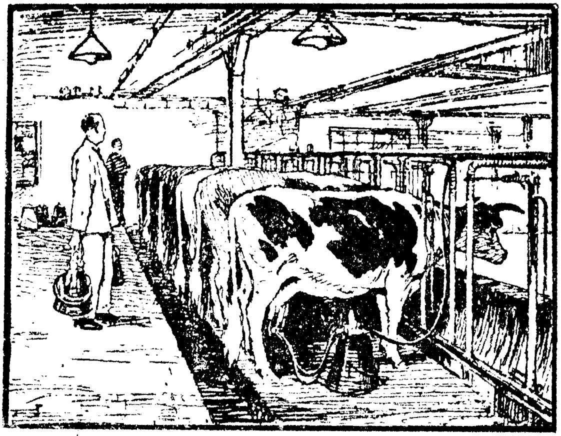


आजकल आस्ट्रेलिया में भेड़ों की ऊन प्रायः मशीन से कतरी जाती है

आय होती है। क्वीन्स लैंड, पूर्वी तथा दक्षिणी तट, एरे प्रायद्वीप अल्बानी से पिलबारा तक की पट्टी किम्बर्ली, न्यूसाउथ वेल्स, विक्टोरिया, पश्चिमी आस्ट्रेलिया आदि स्थानों में भेड़ों के पालने का काम होता है। भेड़ों से ऊन, दूध और मांस प्राप्त होता है।

देश दर्शन

आस्ट्रेलिया में घोड़े, गाय, भैंस, सुअर, भेड़, बकरी और शहद की मक्खियों के पालने का काम होता है। दूध, मक्खन और पनीर तथा जानवरों का मांस तयार करके बाहर भेजा जाता है। शहद भी काफी तयार होती



आस्ट्रेलिया में गायों का दूध प्रायः मशीन से दुहा जाता है।

है और बाहर भेजी जाती है। मुर्गी, बतख आदि चिड़ियां पाली जाती हैं जिससे अंडे प्राप्त होते हैं। अंगूर से शराब तयार की जाती है।

तटों पर मछली मारने का काम किया जाता है। समुद्र से मोती और मूँगे निकाले जाते हैं।

१९३६ ई० में आस्ट्रेलिया में ऊन लगभग ८० करोड़ रुपये का, गाय का मांस २१ करोड़ का, बछड़े आदि का मांस २० करोड़ का, डेरी का सामान ४८ करोड़ का, फल ११ करोड़ का, अंडा आदि १३ करोड़ का, गेहूँ ४५ करोड़ का और ईख ११ करोड़ की पैदा हुई थी।

उसी वर्ष सोना १६ करोड़ का, चांदी ५४ लाख की, सीसा १ करोड़ २० लाख का, चांदी और सीसे का डला ५ करोड़ का, जस्ता आदि १। करोड़ का, कोयला १० करोड़ का, लोहे का पत्थर साढ़े तीन करोड़ का और जंगली उपज का सामान साढ़े दस करोड़ का उत्पन्न किया गया था।

खेती

आस्ट्रेलिया के धंधों में खेती का स्थान दूसरा है। व्यक्तिगत रूप से आस्ट्रेलिया का औसत संसार के सभी देशों से खेती में बढ़ा है। पिछले पचास या साठ वर्षों में यहां खेती की बड़ी उन्नति हुई है परन्तु सबसे अधिक उन्नति गत २५ वर्षों में हुई है।

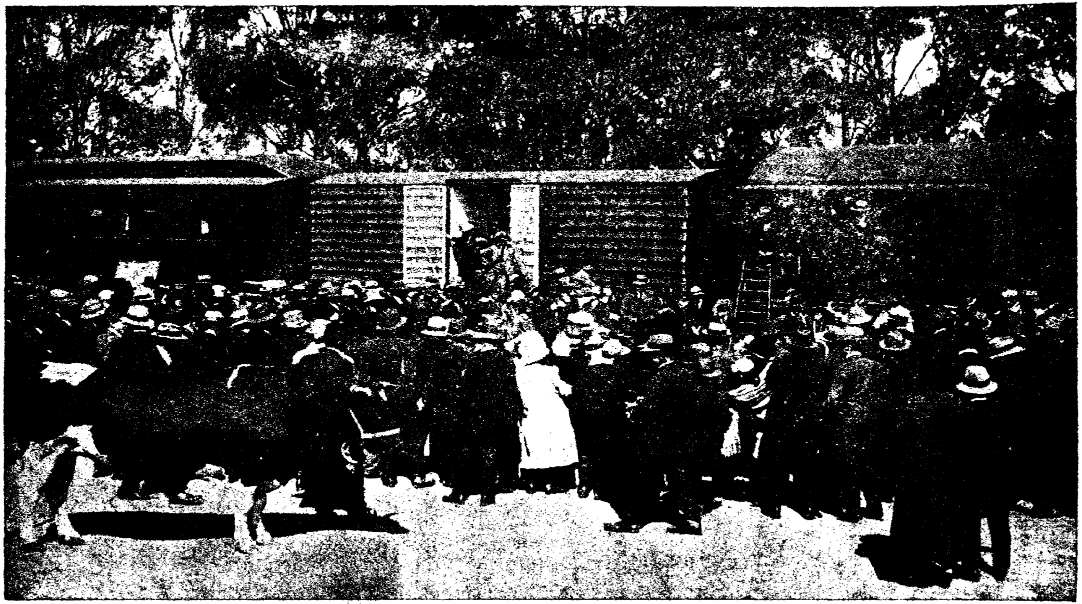


आस्ट्रेलिया इतना बड़ा देश है कि वहाँ भांति भांति की उपज की जा सकती है। आस्ट्रेलिया की मुख्य उपज गेहूं, जौ, ओट (जई), मक्का, आलू, ईख, घास, अंगूर, फल, तम्बाकू और रुई है।

आस्ट्रेलिया की कृषि वाली उपज में गेहूँ का प्रथम स्थान है। यहां कामन वेल्थ की समस्त भूमि के ६ प्रतिशत भाग में खेती होती है। कृषि वाली भूमि के ६८ प्रतिशत भाग में गेहूँ की उपज की जाती है।

क्वीन्सलैंड में न्यूसाउथ वेल्स, विक्टोरिया, यार्क और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में गेहूँ होता है। गेहूँ की खेती तट से हट कर नम भूमि से कुछ दूर तट के समानान्तर पट्टी में होती है। पश्चिमी आस्ट्रेलिया में गेहूं की उपज में अच्छी उन्नति हो रही है और दिन प्रतिदिन उपज बढ़ रही है। १९३७-३८ ई० में यहां लगभग १५ करोड़ मन गेहूँ पैदा हुआ था। गेहूँ के खेत बड़े लम्बे चौड़े होते हैं और खेती का काम मशीनों द्वारा होता है। मशीनें जोतने, बोने, काटने और माड़ने सभी का काम कर लेती हैं।

ईख की खेती क्वीन्स लैंड और न्यूसाउथ वेल्स के



विक्टोरिया प्रान्त के किसानों को कृषि-सुधार के लिये रेलगाड़ी की खिड़की से व्याख्यान दिया जा रहा है

उत्तरी तटीय भाग में होता है। १९३७-३८ ई० में लगभग दो करोड़ १५ लाख मन ईख की उपज हुई थी।

रुई की खेती तटीय पट्टी में न्यूकैसिल से बुंदाबर्ग केप यार्क प्रायद्वीप की उत्तरी तटीय पट्टी और विक्टोरिया नदी के बेसिन में की जा सकती है। अभी किसान छोटे छोटे खेतों में कपास उगाने का काम करते हैं।

आस्ट्रेलिया में बहुत अच्छी तम्बाकू उगाई जा सकती है। प्रतिवर्ष बाहर से लगभग ४ करोड़ रुपये की तम्बाकू मँगाई जाती है। सरकार की ओर से तम्बाकू की उपज बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है जिससे आस्ट्रेलिया अपनी ज़रूरत की पूर्ति स्वयम् कर सके।

इस देश में फल की उपज के बढ़ाने की ओर भी लोगों का ध्यान अधिक आकर्षित हो रहा है। दक्षिणी आस्ट्रेलिया और विक्टोरिया अंगूर उगाने वाले दो मुख्य प्रान्त हैं। अंगूर से शराब बनती है और मुनक्का तथा किशमिश विदेश भेजे जाते हैं। इसके

अतिरिक्त केला, सेव, नाशपाती, अनन्नास, बेर तथा दूसरे फल समस्त देश में उगाये जाते हैं।

आस्ट्रेलिया की जन-संख्या इतनी कम है कि वहां पर जितना सामान पैदा होता है या कारखानों में बनाया जाता है उसका अधिकांश भाग बाहर भेजा जाता है। १६३६-३७ ई० में लगभग ६४ करोड़ का ऊन, ३७ करोड़ का गेहूँ तथा आटा, १६ करोड़ का मांस, ७ करोड़ के फल, १२ करोड़ का मक्खन और पनीर, २० करोड़ का सोना और ७ करोड़ का सीसा विदेश भेजा गया था।

सोना और चाँदी को मिलाकर कुल निर्यात १ अरब ८६ करोड़ का और आयात एक अरब ३६ करोड़ का हुआ था।

१६३५-३६ ई० में प्रधान कारखानों में नीचे दी हुई मात्रा में सामान तयार हुआ। लोहा और फौलाद ११ करोड़ का, इंजीनियरिंग का साधारण सामान साढ़े ६ करोड़ का, ट्रेमकार और दूसरी गाड़ियों का सामान १० करोड़ का, कपड़ा और जूता २१ करोड़ का, शराब ६ करोड़ की, छपाई का सामान लगभग ७



करोड़ का तयार हुआ था। ऊनी सामान कारखानों में लगभग १२ करोड़ का तयार किया गया था।

जून १९३७ ई० में आस्ट्रेलिया के कारखानों में ५ लाख ३५ हज़ार मज़दूर काम पर लगे थे।

आस्ट्रेलिया का अधिकांश व्यापार ब्रिटिश, साम्राज्य के देशों के साथ होता है। अमरीका, न्यूज़ीलैण्ड जापान आदि देशों को भी सामान भेजा जाता है।

आने जाने के साधन

आस्ट्रेलिया में २१४५ मील संघ शासन की और २४,९४४ मील राज्यों की रेलवे-लाइनें हैं। कई रेलवे लाइन बनाने के लिये लगभग ३९ लाख रुपया १९३७ ई० में मंजूर किया गया था। रेलवे लाइनों से लगभग डेढ़ करोड़ की आय हुई थी और व्यय भी लगभग डेढ़ करोड़ हुआ था।

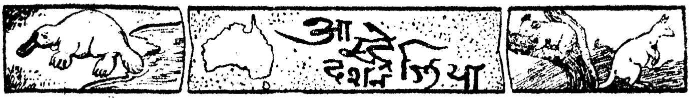
१९३५ में लगभग २ करोड़ १२ लाख रुपया सड़कों पर लगाया गया। राज्यों को संघ-सरकार की ओर से सड़कों के बनाने के लिये साढ़े चार करोड़

दिया गया था। कच्ची और पक्की सड़कों की कुल लम्बाई ४ लाख ७७ हज़ार मील और केवल पक्की सड़कों की लम्बाई १ लाख ६० हज़ार मील है।

आस्ट्रेलिया के भीतरी प्रदेश के हवाई मार्ग की लम्बाई १७ हज़ार मील है। ब्रिस्बेन-डार्विन, सिंगापुर लाइन की लम्बाई ४३६१ मील है। इस मार्ग से होकर हफ्ते में दो बार बिमान द्वारा डाक चलती है। भीतरी मार्ग में प्रति वर्ष ५० लाख मील विमान चलते हैं।

२५ जनवरी १६३० ई० की संधि के अनुसार जनवरी १६३८ ई० से लन्दन से सिडनी तक फ्लाइंग बोट सर्विस आरम्भ हुई और सिंगापुर (जब से सिंगापुर पर जापान का अधिकार हुआ है तब से आस्ट्रेलिया से सिंगापुर को हवाई जहाजों का जाना बन्द हो गया है।) तक इस हवाई मार्ग पर आस्ट्रेलिया को अधिकार दिया गया।

१६३७ ई० में तार की लाइनें बढ़ाई गईं। यह कार्य अधिकतर भीतरी जिलों में किया गया। १६३६-३७ ई० में ६ नये ब्राडकास्टिंग स्टेशन बनाये गये जिससे कुल ब्राडकास्टिंग स्टेशनों की संख्या २१ हो



गई । इसके सिवा ८० और दूसरी ब्राडकास्टिंग संस्थाएँ हैं ।

द्वीप होने के कारण आस्ट्रेलिया में जहाज चलाने का काम प्राचीन समय से ही हो रहा है। अंग्रेजों के अधिकार में चले जाने से उसका सम्बन्ध संसार के प्रायः सभी उन्नतिशील देशों से हो गया है। आस्ट्रेलिया के बन्दरगाहों में इंगलैंड, कनैडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अमरीका के जहाज चला करते हैं। १९३७ ई० में आस्ट्रेलिया के बन्दरगाहों पर औसत से प्रति मास १ करोड़ ४६ लाख ४४ हजार मन सामान उतारा गया और १ करोड़ ४६ लाख ८४ हजार मन सामान लादा गया था ।

आस्ट्रेलिया का तटीय व्यापार भी जहाजों द्वारा होता है। दूसरे देशों को सवारी जहाज जाया करते हैं। जहाजी कामों में आस्ट्रेलिया अच्छी उन्नति कर रहा है ।

आस्ट्रेलिया के मुख्य बन्दरगाह सिडनी, मेल्बोर्न, ब्रिस्बेन, एडीलेड, पोर्ट अगस्टा, पर्थ, ब्रूमे, विण्टम, डार्विन, कैन्र्स और टाउन्सविली हैं ।

धर्म

आस्ट्रेलिया के काले लोगों का कोई खास धर्म नहीं है वे ईश्वर अथवा औतार और देवी देवताओं में विश्वास नहीं करते हैं। पवित्रता शक्ति और शासन आदि सभी शक्तियां मनुष्य में वर्तमान मानी जाती हैं। जाति अथवा वर्ण की भलाई के हेतु पवित्र संस्कार का करने वाला अगुवा अपने वर्ण के पशु या बनस्पति का प्रयोग नहीं करता, शेष दूसरे प्राणी उसे अपनी जीविका का सहारा बनाते हैं।

डीरी जाति के लोग मूरा-मूरस नामक कल्पित शक्ति में बिश्वास करते हैं जो आधुनिक काले लोगों का जन्मदाता मानी जाती है। असन्ता जाति का विश्वास है कि प्रत्येक जीवन में मनुष्य का लिंग बदलता रहता है। दक्षिणी असन्ता जाति देवताओं में विश्वास करती है।

आस्ट्रेलियन कल्पित कहानियों में पक्षीगण, पशु और मनुष्य में बहुधा लड़ाई की कहानियां वर्णन की जाती हैं। यूक्ला जाति के पितृ आकाश गंगा में निवास करते हैं। जब धार्मिक संस्कार होते हैं तो इस जाति के

लोग आकाश-गंगा की ओर अपनी दृष्टि लगाये रहते हैं।

बैआमे, माल्बंगा, अन्टजीरा, ट्वाञ्जीराका, डारा-मूलुन, मुंगन-न्गौआ आदि कल्पित जनों की पूजा की जाती है।

विक्टोरिया के निवासी आकाश को बुञ्जिल अथवा पुंडजेल नाम से पुकारते हैं। वे अपने पितृ को मामिन-गोरक कहते हैं।

मैक्वारी झील के आस्ट्रेलियन निवासी कोएन नामक कल्पित आत्मा की उपासना करते हैं। कोएन दुष्ट आत्मा मानी जाती है। कोएन की स्त्री का नाम मैल्कुन या टिपाकाल्यून है। याहो नामक आत्मा सबसे ऊँचे पर्वत की चोटी पर रहने वाली मानी जाती है। इसी प्रकार वह कल्पित जनों की पूजा करते हैं और शारीरिक तथा भोजन सम्बन्धी वस्तुएँ प्राप्त करते हैं।

समाज-बन्धन और विवाह

आस्ट्रेलिया के प्राचीन निवासियों का सामाजिक संगठन एक अद्‌भुत प्रकार का है जिसका समझना बड़ा कठिन है। जाति, वर्ग, वर्ण, कुल और कुटुम्ब आदि

की समस्त समस्याओं को भली भाँति समझ लेना बड़ा ही कठिन है। एक वर्ग के लोग प्रायः एक बड़े प्राकृतिक भाग में निवास करते हैं, एक भाषा का प्रयोग करते हैं और एक ही प्रकार के धर्म का पालन करते हैं। उनके रीत-रिवाज भी एक ही ढंग के पाये जाते हैं।

एक वर्ण के लोग जितनी भूमि में रहते हैं वह उसके भीतर घूम फिर सकते और शिकार आदि कर सकते हैं। यदि उस भाग में किसी दूसरे वर्ग या वर्ण का कोई आ गया तो सदैव झगड़ा होने की शंका हो जाती है। वह वहाँ पर केवल आज्ञा पाकर ही रह सकता है। आस्ट्रेलिया निवासी साधारण तौर पर अपने झोंपड़े स्थायीरूप से नहीं बनाते हैं। वह भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमते फिरते रहते हैं। वे बड़े सीधे-सादे ढंग से रहते हैं। प्रत्येक वर्ग दो बड़े भागों में विभाजित रहता है जिसे फिरैट्रीज़ कहते हैं। फिरैटरीज़ के आठ आठ भाग होते हैं। वर्ण और कुल छोटे भाग हैं। सब से छोटा भाग कुटुम्ब का है। स्थानीय वर्णों में आपस में व्याह हो सकते हैं। व्याह के बाद स्त्री अपने पति की जाति की हो सकती है परन्तु वह अपने

माता-पिता के वर्ण की भी मानी जाती है। ब्याह होने पर स्त्री-पुरुष साथ साथ जिस वर्ग के बीच जीवन व्यतीत करते हैं वह उसी वर्ग के माने जाते हैं और उनके बच्चे उसी वर्ग के समझे जाते हैं। शिकार करने की भूमि पुरुष वर्ग होकर चलती है। कुटुम्ब का बालक उस धरती का मालिक माना जाता है। बालक अपने वर्ग, वर्ण या जाति का नाम ग्रहण कर सकता है। वह अपनी माता के वर्ग का नाम भी ग्रहण कर सकता है।

यदि सारांश रूप से देखा जावे तो प्रत्येक वर्ण एक फ्रैटरी का आधा और वर्ग का चौथा, आठवाँ या सोलहवाँ भाग है।

एक वर्ण का पुरुष अपने वर्ण की कन्या से ब्याह नहीं कर सकता है। शादी के चुनने में बड़ा झगड़ा पड़ता है। ग़लत चुनाव करने पर या समाज बन्धन तोड़ने पर प्राण दण्ड मिल जाता है। जब कोई पुरुष अपना ब्याह किसी दूसरे वर्ण की कन्या से करना चाहता है तो उसके लिये सब से सरल उपाय यह है कि वह अपनी बहिन को बदले में दे दे।

यदि कोई शादी ग़लती से हो गई और स्त्री-पुरुष

राजी हुए और उन्हें वर्ण के लोगों ने माफ भी कर दिया तो फिर पति को स्त्री के पिता, भाई, चाचा, मामा आदि से अलग अलग लड़ना पड़ता है। यदि उसने कम से कम चार मनुष्यों को अलग अलग पछाड़ दिया तो फिर वह उस स्त्री को ले जा सकता है नहीं तो उसे उसके बदले में अपनी कोई बहिन देना पड़ता है। ऐसी स्त्री जब पकड़ ली जाती है तो उसके माता-पिता उसे मारते हैं।

किसी किसी जाति में तो यह होता है कि शादी का मामला तय हो जाता है और स्त्री पुरुष को पसन्द नहीं करती बल्कि उसे विवश होकर उसके साथ जाना पड़ता है। उसके पति को पूरा अधिकार प्राप्त होता है कि वह मार कर ले जावे।

बहुधा १२ बर्ष की कुमारियों का विवाह ५० या ६० वर्ष के पुरुष से होता है क्योंकि समाज बन्धन के अनुसार उसे दूसरी स्त्री का मिलना कठिन होता है। यदि स्त्रियाँ मिल सकें और मनुष्य कमा कर खिला सके तो फिर मनुष्य जितनी चाहे शादियाँ कर सकता है।



संयोगवश यदि किसी पुरुष को स्त्री बालक होती है तो स्त्री अपने माता-पिता के साथ ही युवा होने के लिये छोड़ दी जाती है यदि वह अपने पति के साथ ही रहना चाहती है तो रहती है। पति उसके साथ अच्छा व्योहार करता है और भोजन के लिये मांस देता है। वह उससे नहीं बोलता परन्तु यदि बालक स्त्री अपनी सेवा से अपने पति को प्रसन्न कर लेती है तो पति प्रसन्न होकर उसके शरीर में चर्बी तथा दूसरे लेपों की मालिश करता है जिससे वह शीघ्र ही युवा हो जावे।

स्त्रियों को फँसाने या प्रेमिका बनाने का रिवाज आस्ट्रेलियन जाति में नहीं है। यदि कोई स्त्री युवा हो जाती है तो उसे पति चुनने का अधिकार नहीं है जब तक कि वह किसी के संग भाग न जावे।

किसी किसी जाति में स्त्री के प्रथम बालक को मार डालने का रिवाज है। कुछ जातियां अकाल के समय अपने बालकों को खा जाती हैं। बच्चों की उत्पत्ति में स्त्रियों को बहुत कम कष्ट होता है। चलती फिरती गर्भवती स्त्री के बच्चा पैदा होता है और वह एक बूढ़ी स्त्री के सहारे अपने बच्चे को पास के सोते में धोकर

अपने घर ले आती है। बच्चें को चटाई या कम्बल में बांध कर पीठ पर स्त्रियाँ लादे रहती हैं और बड़ा होने पर कंधे पर रखती हैं। बच्चों के लिये कोई खास भोजन नहीं दिया जाता है। इसी कारण वे बड़े दुबले पतले होते हैं। चार-पाँच वर्ष में वह अपना पेट धोका देकर या चोरी करके बहुधा भरते हैं। काली जाति में चुम्बन प्रथा किसी को मालूम ही नहीं है। स्त्रियाँ अपने अपने नव-शिशु के अवश्य ही चुम्बन लेती और फूंकती हैं। सात वर्ष की अवस्था तक लड़के और लड़कियां एक साथ खेलते हैं और अलग नहीं किये जाते हैं परन्तु सात वर्ष के पश्चात् बालक ब्रह्मचारी पुरुषों के मध्य रक्खा जाता है उसे लड़कियों या स्त्रियों के समाज में जाने की आज्ञा नहीं दी जाती है।

बच्चों के नाम, जाति, वर्ग, वर्ण, पशु-पत्ती, पहाड़ या नदी के नाम पर रक्खे जाते हैं। पुरुष का नाम कई बार बदलना पड़ता है जिससे उससे कोई बदला न ले सके या यदि उसके नाम का कोई दूसरा मर जाता है तो भी नाम बदलना पड़ता है। मनुष्य अपनी सासों से नहीं मिल सकते हैं।



संस्कार

काली जाति के कुल तथा वर्ण में इतनी भिन्नता पाई जाती है कि समस्त जाति के लिये कोई साधारण बात सामूहिक रूप से नहीं कही जा सकती है। मृतक संस्कार ६ भिन्न भिन्न तरीकों से किया जाता है। कहीं शरीर जलाया जाता है, कहीं गाड़ा जाता है और कहीं वृक्ष के ऊपर रक्खा जाता है।

पश्चिमी आस्ट्रेलिया में कब्र उत्तर-दक्षिण बनाई जाती है और मृतक का मुँह पूर्व की ओर लेटाते समय घुमा दिया जाता है। लाश की टांगें घुटने से तोड़ कर दुहरा दी जाती हैं जिससे एँड़ी जांघ को छू सके। सिर के बाल और दाहिने हाथ की छोटी अँगुली का नाखून काट लिया जाता है। अंगुली और अँगूठा एक साथ कस कर बाँध दिये जाते हैं। माथे पर सफेद मिट्टी रख दी जाती है। समाधि पर आग जलाई जाती है जिसकी राख और धुँएँ से लोग डरते हैं। मरने वाले मनुष्य के हथियार तथा लड़ाई के सामान तोड़कर उसी के समीप रख दिये जाते हैं। समाधि के चारों ओर हरी टहनियाँ गाड़ दी जाती हैं। कुछ अरुन्ता जाति वाले मृतक शरीर

को बैठा कर गाड़ते हैं। मनुष्य के मरने वाले स्थान तथा समाधि के स्थान की देख भाल कई दिनों तक की जाती है। यदि कोई चिन्ह किसी के आने का पाया जाता है तो उसे ही उस मनुष्य का हत्यारा माना जाता है और फिर उसे ढूँढ़ कर बदला लिया जाता है। यदि समाधि के पास अभाग्य से कोई पशु मिल जाता है। तो उसे हत्यारा समझ कर ही मार डाला जाता है।

इसी प्रकार बाल-संस्कार भिन्न-भिन्न कुलों तथा वर्णों में भिन्न-भिन्न भांति से मनाये जाते हैं। इन संस्कारों को बोरा, बखुङ्ग, डोरा, जेराईल और कीबाला आदि नाम से पुकारते हैं। बाल-संस्कारों को बच्चे अथवा स्त्रियां नहीं देख सकतीं क्योंकि इससे उन्हें हानि पहुँचने की शंका रहती है। यह संस्कार साधारण रूप से १२ वर्ष की अवस्था से आरम्भ होते हैं।

न्यूसाउथ वेल्स के दक्षिण-पूर्व में बुनान संस्कार इस प्रकार मनाया जाता है:—एक बड़े साफ मैदान में चार-पांच सौ गज़ की दूरी पर दो गोलाकार मिट्टी के चबूतरे चारों ओर से घेर दिये जाते हैं। केवल मैदान की ओर मार्ग खुला रहता है। इस संस्कार के लिये

दूसरे वर्ण के लोग बुलाये जाते हैं तो एक बालक जिसका बाल-संस्कार हो चुका होता है वह दिया जाता है और वह एक लट्ठे की ओर संकेत करके सांप सांप चिल्लाता है और एक टहनी लेकर भागता है। उपस्थित मनुष्य उनके पीछे दौड़ते हैं और वह प्रत्येक डेरे की स्त्रियों को चेतावनी देते हैं कि संस्कार हो रहा है। कुछ नाच-गान होने के बाद सभी छोटे चबूतरे को ओर जाते हैं जहां वह डारा मूलुन, साँप और दूसरी वस्तुओं की मिट्टी की बनी मूर्तियां देखते हैं, यह कार्य प्रत्येक जाति के प्रतिनिधियों के आने पर होता है इसलिये इसमें हफ्तों समय लग जाता है। जब सभी आ जाते हैं तो बड़े बूनान (चबूतरे) में आग जलाई जाती है। संस्कार वाले बालक अपने होने वाले सालों की देख भाल में रहते हैं। साले बालकों के शरीर पर रंग-बिरंगे चित्र बनाकर सजाते हैं तब वह चबूतरे पर ले जाये जाते हैं। प्रत्येक बालक के हाथ में स्त्री की धरती खोदने वाली छड़ी रहती है जिसको वे पैर के मध्य में लिये रहते हैं। झोले के भीतर मनुष्य को सजाने की समस्त सामग्री रहती है। उसके पश्चात् लड़के आग के समीप

लाये जाते हैं और स्त्रियाँ कई मील दूर डेरे में पहुँचाई जाती हैं।

तब ऐसे नाच-गान होते हैं जिससे बालक प्रभावित हो जाते हैं कि उनके जीवन के परिवर्तन का समय आ गया है। भांति भांति के नाटक तथा दूसरे दृश्य दिखाये जाते हैं जिसमें बालकों को भी भाग लेना पड़ता है। बालकों के पीठ पर शक्ति प्रदान करने के लिये हाथ फेरते हैं।

उसके बाद डारा मुलून की मूर्ति बनाई जाती है। जो संस्कार का प्रमुख देवता माना जाता है तब दस मनुष्य संस्कार के भेष धारण करते हैं और पूर्ण रूप से डारामुलून का भेष धारण करके झाड़ियों में छिप जाते हैं। नाच-गान फिर होने लगता है और एकाएक एक डारामुलून झाड़ी से बाहर नाचता हुआ आता है वह अपना काटने वाला दांत चेले के दाँतों के बीच रखकर ऊपर की ओर ज़ोर से दबाता है उसके बाद दाँत पर पत्थर की रुखानी रखकर हथौड़े से चोट देता है इस प्रकार कुल दांत गिरा दिये जाते हैं और वह एक बूढ़े व्यक्ति को दे दिये जाते हैं। बालकों को पीड़ा के

कारण चिल्लाने अथवा रोने से मना कर दिया जाता है। यदि कोई रोता है तो देखने वाले लोग चिल्लाने लगते हैं।

उसके बाद बालकों को युवा-मनुष्य का भेष धारण कराया जाता है और मासिक शिक्षा प्रदान की जाती है। मासिक शिक्षा प्रदान करने के लिये नाच-नाटक तथा गाने आदि समस्त रात होते रहते हैं।

दूसरे दिन डारामुलून का चित्र धरती में खोदा जाता है और उसके चारों ओर नाच होता है। उसके बाद उस दल के लोग उठते हैं जो मृतक माना गया था और चेलों (बालकों) के शरीर के चित्र मिटा दिये जाते हैं। उसके बाद समस्त दल स्त्रियों द्वारा बनाये हुये डेरों को जाते हैं। चेले घर नहीं जाते उन्हें कुछ समय तक बनों में निवास करना पड़ता है। उस समय उनको पक्षी अथवा पशु वर्ग का नाम दिया जाता है। जंगल में निवास करते हुये वह अपने वर्ग के पशु-पक्षी अथवा बनस्पति का भोजन नहीं कर सकते हैं।

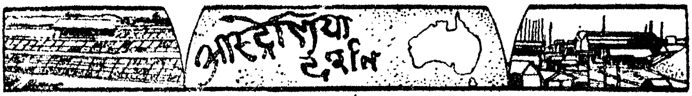
दांत बड़ी सावधानी से रक्खे जाते हैं यदि उनका कड़ा प्रयोग हुआ तो उससे उस बालक को कष्ट होने का भय रहता है जिसके कि वह दांत हैं।

यह संस्कार भी भिन्न जातियों में भिन्न प्रकार से मनाया जाता है। इसी प्रकार जीवन के और दूसरे संस्कार होते हैं और जब तक मनुष्य बूढ़ा नहीं होता उसका कोई न कोई संस्कार होता रहता है।

मूल निवासियों की कला और विज्ञान

आस्ट्रेलिया की काली जाति के लोगों की कला और विज्ञान संसार में अपना एक निराला महत्व रखते हैं। आस्ट्रेलियन निवासी अपने अस्त्र-शस्त्र, पक्षियों, पशुओं और जिनका पूजन करते हैं उन व्यक्तियों के चित्र तथा मूर्तियाँ बनाते हैं। उनके चित्रों और मूर्तियों की कला बड़ी निराली होती है। निस्संदेह ही उनके चित्र वहीं होते हैं जिन पर उनका अपना निजी विश्वास होता है परन्तु उनकी कला में जो भाव दिखाये जाते हैं उनकी प्रशंसा आधुनिक कलाकारों को करनी ही पड़ती है। आस्ट्रेलिया में प्राचीन चित्र जो मिले हैं वह बड़े सुन्दर तथा आकर्षित और भावपूर्ण है।

आस्ट्रेलियन काली जाति का विश्वास है कि पृथ्वी चपटी है और चारों ओर से पानी से घिरी है विक्टो-



रिया के काले लोगों का विश्वास है कि आकाश स्तम्भों पर टिका है और उसमें सूर्य भ्रमण करता रहता है। वे सूर्य को स्त्री और चन्द्रमा को पुरुष लिंग मानते हैं। वे समझते हैं कि चन्द्रमा और सूर्य दोनों ही किसी बड़े छिद्र में जाकर छिप जाते हैं।

आस्ट्रेलियन लोग चन्द्र और सूर्य-ग्रहण की ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। जब ग्रहण लगता है तो वह अपने भाले ऊपर की ओर उछालते हैं ऐसा करने से उनका विश्वास है कि चन्द्रमा अथवा सूर्य पर जो कष्ट आया है वह निवारण हो जावेगा। पुच्छलतारों के सम्बन्ध में उनका ख्याल है कि वे मानव जाति के बड़े शत्रु हैं जो लम्बे भाले लेकर मानव जाति का सत्यानाश करने के लिये आते हैं। टूटते हुये तारों के सम्बन्ध में उनका विचार है कि वह मरे हुये लोगों की आत्माएँ हैं या वे जादूगरनी की अग्नि की लकड़ी हैं जो किसी को मारने के लिये पृथ्वी पर गिराई जाती हैं। तारा-गणों को वह अपने प्राचीन क़िस्से कहानियों में आये हुये व्यक्तियों का रूप मानते हैं जो आकाश में रहते हैं। आकाश-गङ्गा को वह एक नदी मानते हैं जिसमें मछलियां

भरी पड़ी हैं। उसमें लगातार युद्ध होता है और रक्त पात के कारण ही उसका रंग कुछ लाल रहता है। बादल को वह बड़ा सांप मानते हैं इसी कारण जब बादल उमड़ते हैं तो वह बचने के विचार से अपने झोपड़ों और डेरों में घुस जाते हैं। इन्द्र-धनुष को भी वे एक बड़ी मछली मानते हैं। बिजली की गरज को कभी कभी तो वह किसी देवता का शब्द और कभी कोई स्वतंत्र जीव मानते हैं।

वे अपनी चिकित्सा अधिकतर जादू द्वारा किया करते हैं। जब कोई मनुष्य बीमार होता है तो उसके सिर पर एक डोर या तार रक्खा जाता है। उसका एक सिरा एक स्त्री के मुँह में रक्खा जाता है। स्त्री उसको मुँह से रगड़ती है जब खून निकलता है तो स्त्री के मुँह का खून मनुष्य का माना जाता है इस प्रकार वह अच्छा हो जाता है। जब कोई स्त्री बीमार होती है तो यह कार्य पुरुष करता है और उस स्त्री के शरीर के भीतर से वह जादू द्वारा प्रवेश की हुई वस्तुएँ बाहर निकालता है। तगड़े मनुष्य का खून निकाल कर बीमार के शरीर पर एमू पक्षी के पंख से लगाया जाता है और बीमारी

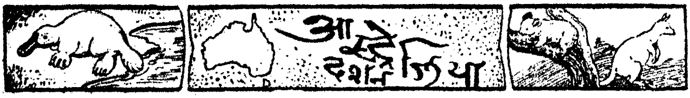
अच्छी की जाती है। सिर की पीड़ा नाक से खून निकाल कर अच्छी की जाती है। चोट लगने पर चर्बी, ग्रीस, कीचड़, छाल, चारकोल और दूसरे भांति भांति के मलहम लगाये आते हैं।

साँप के काटने पर उसका खून चूसा या काटकर निकाला जाता है। उसे भाप से नहलाया जाता है और जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता है। चर्म-रोगों से काले लोग बहुत मरते हैं उसका उपाय उनमें कम है योरुपीय रोगों से भी काले लोग बहुत संख्या में मरते हैं और उनका प्रभाव बड़ा भीषण सिद्ध होता है।

जंगली लोग अपने औज़ार और हथियार पत्थर के बनाते हैं। हड्डो, सख्त लकड़ी के भो अस्त्र बनाये जाते हैं। बरमा, चाकू, छुरी आदि हड्डो और दांत के बनाये जाते हैं। नाव वृक्ष के तने को काट कर बनाई जाती है। बहुत से लट्ठे एकत्रित करके बाड़ा बनाया जाता है। भाले, तलवार, बर्छे, तोर, मुँगरी, गदा और ढाल पत्थर, हड्डी और सख्त लकड़ी के बनाये जाते हैं। मछली पकड़ने के लिये वह जाल तथा बड़े बिच्छू के सूखे शरीर के कांटे बनाते हैं। स्त्रियों की खोदने वाली

छड़ियां कड़ी लकड़ी की बनती हैं। वह दो से चार फुट तक लम्बी होती हैं और एक सिरा चपटा, चिकना और तेज बनाया जाता है। उस पर गोंद, लहू और दूसरी वस्तुओं का लेप लगा दिया जाता है जिससे वह और कड़ा हो जावे।

गोंद का प्रयोग वह बहुत करते हैं। गोंद को दूसरी वस्तुओं के रस, खून और चर्बी में मिलाकर वह तरह तरह के लेप तयार करते हैं। शरीर पर लगाने के लिये वह श्वेत, लाल, पीले लेप बनाते हैं। रंग बनाने के लिये वह वृत्तों की छाल और जड़ का प्रयोग करते हैं। चमड़े और छाल के कपड़े तथा डेरे बनाये जाते हैं। छाल और बाल से रस्सियां तयार की जाती हैं। छाल से टोकरियां, झोले और जाल तयार किये जाते हैं। टोकरियों को कहीं कहीं ढक्कन भी तयार किये जाते हैं दो वस्तुओं को रगड़ या काट कर गरमी उत्पन्न करके आग तयार की जाती है। वस्त्र पहिनने का रिवाज बहुत लोगों में बिल्कुल नहीं पाया जाता है। वे नंगे रहना अधिक अच्छा समझते हैं। सिर पर बालों को पीछे रखने के लिये एक प्रकार का जाल पहिना जाता है।



शरीर सुसज्जित करने के लिये वह हड्डियों, छालों, दांतों, बालों और सुन्दर स्वेत लेपों का प्रयोग करते हैं। नाक में हड्डी की एक कील पहिनी जाती है। दूसरे आभूषण भी हड्डी के बनाये जाते हैं। रहने के झोपड़े घास-फूस और लकड़ी के बनते हैं। डेरे, चमड़े, बाल और वृक्षों की छाल से बनते हैं। झोपड़ों के बनाने का अधिकांश काम स्त्रियां करती हैं।

खेल तमाशे

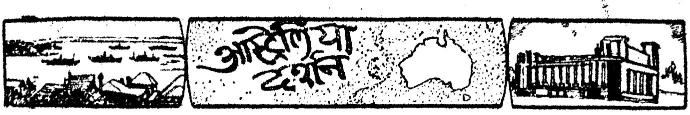
काले लोगों के बीच भाँति भाँति के खेल-तमाशे प्रचलित हैं। यद्यपि उन्हें भोजन के लिये बहुत खोज करनी पड़ती है। फिर भी वह नाच-गान और खेल-तमाशों के लिये समय निकाल ही लेते हैं।

कूरी नाच में २५ युवकों और बालकों का मुख्य समूह भाग लेता है। वे नंगे रहते हैं और पैर के घुटनों से कमर तक गोंद लगी पत्तियाँ चिपकाये रहते हैं जिससे पत्तियों की फड़फड़ाहट की आवाज़ पैदा होती रहे। वह अपने हाथ में खोदने वाली लकड़ी लिये रहते हैं। उनका शरीर सफेद या लाल लेप से रंगा रहता है। इसी प्रकार

बालकों का समूह रहता है अपने कंधे से मुँह तक का भाग रंगे रहते हैं। उनके सोने पर छः सफेद पट्टियाँ बनाई जाती हैं और मुँह पर सीधी सफेद सतरें खींची जाती हैं। उसके बाद स्त्रियों का दो समूह रहता है वे पत्तियों की डालियाँ लिये रहती हैं। दो मनुष्य चिड़ियों के पंखों से सजी हुई छड़ियां लिये आते हैं। एक उसे अपने सिर के बगल में रखता है और दूसरा सामने हिलाता चलता है। उसके बाद नाच आरम्भ कराने वाला आता है जिसके हाथ में लम्बा बरछा रहता है जिसके सिरे पर पंख की एक बड़ी भाला पहचान की लगी रहती है। सबसे आखिर में दो गाने वाले आते हैं वह बीच बीच में खोदने वाली छड़ी और गदा को एक दूसरे को टकरा कर बाजा बजाते हैं।

जब सब एकत्रित हो जाते हैं तो बड़े भाले के इशारे पर नाच आरम्भ होता है। नाचते समय वह सीधी टेढ़ी रेखा में नाचते हुये गोलाकार रूप धारण करते हैं। इसी प्रकार तीन चार घंटे नाच होता रहता है।

किसी नाच में केवल स्त्रियाँ किसी में केवल मर्द



ही रहते हैं। नाच देखने के लिये दर्शक भी इकट्ठे होते हैं। इस प्रकार भाँति-भाँति के नाच गान होते हैं। गीत गाने का काम नाच में अधिकतर स्त्रियां किया करती हैं। वे कभी कभी अपने समाजिक नाटक भी खेलते हैं। संस्कार ब्याह, मृत्यु और शिकार आदि के नाटक खेले जाते हैं। क्वीन्सलैण्ड और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में नगाड़े और दूसरे भांति के बाजे बजाये जाते हैं परन्तु अधिकतर छड़ियों से बाजे को बजाने का काम लिया जाता है।

कैट्स-क्रैडिल (बिल्ली का झूला) आस्ट्रेलिया का एक प्रसिद्ध खेल है। इस खेल को पुरुष-स्त्री और बच्चे सभी खेलते हैं। इस खेल में जो चित्र बनाये जाते हैं वह मिश्रित ढंग के होते हैं। एक रस्सी और पत्ती का मनुष्य बनाया जाता है जो वृक्ष पर चढ़ता है।

पशु-पक्षी के खेल खेले जाते हैं और उनकी सूरत बना कर ठीक उन्हीं की भाँति चलने की नकल की जाती है। कँगारू-खेल नकल में दूर से विदेशी को पता नहीं चल सकता कि कँगारू का समूह आ रहा है या खेल खेलने वालों का समूह खेल रहा हैं।

पक्षियों और पतिंगों के खेल में मार्चफ्लाई (मक्खी की चाल) का खेल प्रसिद्ध है। बच्चे एक समूह में खड़े हो जाते हैं मक्खी बनने वाला बालक अपनी आंख बन्द करके दूसरे बालकों का तलाश करता है और जब पकड़ पाता है तो उसे कान में भुनभुना कर चुटकी काट लेता है मानो मक्खी डंक मार रही है।

बुरी आत्मा चुड़ैल, डाकिनी आदि के खेल भी खेले जाते हैं। चुड़ैल अपना भेष धारण करके तेज खोदने वाली लकड़ी लेकर आती है जो आग से जली हुई लाल मानी जाती है। बच्चे रात में सोने का बहाना करके सो जाते हैं। चुड़ैल अपने अपराधी को ढूँढ़ती है इस पर सभी जाग उठते हैं और चुड़ैल को पकड़ लेते हैं।

बच्चे आस्ट्रेलियन काले लोगों के जीवन की घटनाओं (कुटुम्ब जीवन, विवाह, संस्कार, झोपड़े बनाना आदि) की नक़ल के खेल भी खेलते हैं। गुड़ियों का खेल भी होता है।

जातियों के बीच खेलों के टोर्नामेंट होते हैं। यह खेल एक मास में एक बार होते हैं। जिसकी भूमि में

खेल होता है उसे प्रबन्ध करना पड़ता है। ऐसे खेलों को मून कहते हैं। मून का स्थान दो तीन महीने बाद बदल दिया जाता है। जिसकी भूमि में खेल होता है वह जाति मैदान में पहले आ जाती है। उसके बाद समाचार वाहक द्वारा दूसरी जाति मैदान में बुलाई जाती है। सबसे अच्छा खेलाड़ी चिल्लाकर बंदगी करता है। दोपहर के बाद भूमिपति बूमेयेरिंग (हंसिया कटार) या भाला विपरीत दल पर फेंक कर झगड़ा आरम्भ करता है। विपरीत दल का कोई मनुष्य खड़ा होकर उस मनुष्य को गाली देना आरम्भ करता है जिसने उसे हानि पहुँचाई है, या उसकी स्त्री चुरा ले गया है। धीरे-धीरे समस्त दल गाली गुफ्ता में भाग ले लेता है। यदि इस प्रकार भी झगड़ा न हुआ तो दो में से किसी एक दल का कोई व्यक्ति निकल कर विपरीत दल के स्त्रियों बच्चों पर बूमेयेरिंग या भाला फेंकता है। चूंकि यह कार्य नियम विरुद्ध होता है इसलिये अवश्य ही लड़ाई आरम्भ हो जाती है।

यद्यपि लड़ाई में असली तलवारें, कटारों और भालों का प्रयोग किया जाता है तो भी मृत्यु बहुत कम

होती है। मृत्यु जभी होती है जब कोई जान बूझ कर शत्रुता के कारण किसी को मार देता है। यदि किसी लड़ाई में कोई दल कमजोर रहता है तो दूसरे लोग कमजोर दल में शामिल हो जाते हैं यहाँ तक कि संख्या पूरी करने के लिये विरोधी दल के लोग भी सम्मिलित होते हैं जिससे खेल में किसी प्रकार की त्रुटि न उत्पन्न हो।

ऐसे युद्ध में रिस्तेदार एक दूसरे को ललकार कर मैदान में आते हैं और एक दूसरे पर वार करते हैं। वार रोकने के लिये ढाल का प्रयोग किया जाता है। आखिर को हानि पहुँचाने वाला व्यक्ति अपने विरोधी के मुख पर फूंकता (चुम्बन चिन्ह) है।

संध्या समय लड़ाई समाप्त हो जाती है और आपस में फिर मेल हो जाता है। कभी कभी झगड़ा आरम्भ करने वाले की मृत्यु भी हो जाती है। परन्तु फिर भी जातियों में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं उत्पन्न होता है। इसी प्रकार और दूसरे खेल खेले जाते हैं। रस्सा खींचने, कुश्ती लड़ने, डांकने, कूदने और वृक्ष पर चढ़ने के खेल भी होते हैं।

बच्चे तो भांति भांति के खेल खेलते हैं। वह एक

दूसरे पर खड़े होकर हाथ नीचे की ओर लटका कर हाथों का वृत्त बनाते हैं। गेंदा, उछालने, लोकने, एक दूसरे को मारने का खेल खेला जाता है। बच्चे लट्टू नचाने का खेल भी खेलते हैं। बच्चे छिपने और ढूँढ़ने का भी खेल खेलते हैं। छिपाने वाला पकड़े जाने के पहले घर भागने का प्रयत्न करता है। वह कोई छोटी वस्तु छिपाया करते हैं।

आस्ट्रेलिया के गोरे लोग

मूल निवासियों का कुछ विस्तारपूर्ण वर्णन पढ़ने से यह भ्रम होने की सम्भावना है कि यहां मूल निवासियों की प्रधानता है। यह भ्रम एक दम निराधार है। इस समय यहाँ के प्रधान निवासी गोरे लोग हैं जो भिन्न-भिन्न समयों में ब्रिटेन से आकर यहां बस गये। यही गोरे लोग आस्ट्रेलिया के प्रधान निवासी शासक और पूँजीपति हैं। इन्हीं हाथ में आस्ट्रेलिया की सोने-चांदी की खानें, उत्तम खेती के स्थान, चरागाह और बन हैं। यही लोग इँगलैंड के गोरों की तरह शिक्षित हैं और तरह तरह के काम में लगे हुये हैं। इनकी संख्या

लगातार बढ़ती जा रही है पर आस्ट्रेलिया की आधे से अधिक जन-संख्या यहाँ के बड़े बड़े पाँच छः शहरों में बसी हुई है।

मूल निवासियों की संख्या कुछ ही हजार है और लगातार घटती जा रही है। कुछ भागों के मूल निवासी बड़ी निर्दयता से नष्ट कर दिये गये। टस्मेनिया में एक भी मूल निवासी जीवित नहीं बचा है। शेष निवासी उन दुर्गम रोग ग्रस्त बनों अथवा रेगिस्तानों में अपने दिन काट रहे हैं जहाँ गोरे लोग बसना पसंद नहीं करते हैं।

रक्षक सेना

आस्ट्रेलिया कामन वेल्थ ने अपनी रक्षा के लिये जल तथा स्थल सेना का स्वतंत्र रूप से संगठन कर रक्खा है। १९१४ ई० के योरुपीय महासमर में उसने ब्रिटिश साम्राज्य को बड़ी सहायता की थी।

आस्ट्रेलिया के राएल जहाजी जंगी बेड़े में १० हज़ार टन के दो क्रूशियर (लड़ाका) जहाज, एक ७२५० टन का लड़ाका जहाज और कुछ छोटे जहाज

हैं जो प्रत्येक समय तयार रहते हैं। इसके अतिरिक्त एक ५१०० टन का क्रूशियर जहाज और ५०००टन का समुद्री-विमान ले जाने वाला जहाज और कुछ दूसरे छोटे जहाज समय पर काम करने के लिये स्थाई रूप से हैं १९३७-३८ ई० में आस्ट्रेलिया ने अपने जहाजी बेड़े को ९०,००,००० लाख रुपये की अधिक सहायता की थी कि वह अपने लड़ाका जहाजों को और अधिक शक्तिशाली बनावे। इस धन से बन्दरगाहों का रक्षा-कार्य किया गया और डार्विन को जहाजी तथा हवाई अड्डा भी बनाया गया। अब ६ क्रूशियर, ४ विध्वंसक, १ फ्लोटिला वाहक और एक सुरंग हटाने वाला जहाज हैं। जल-सेना में ३७१ अफसर और ३८८९ सैनिक हैं।

आस्ट्रेलिया के पास स्थाई सेना १०,१७० है परन्तु मिलीशिया सेना में ५० हजार सैनिक, ५६२५ अफसर और ४८३० दूसरे प्रकार के सैनिक हैं।

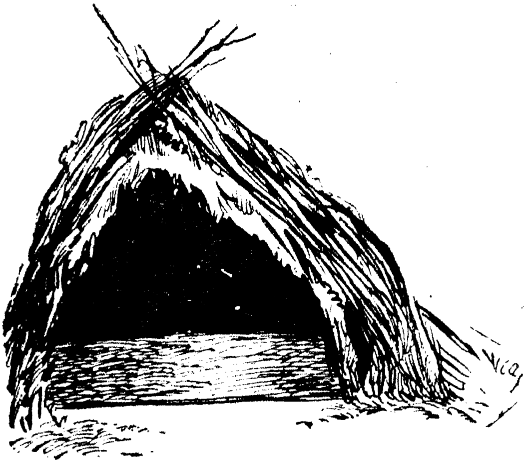
आस्ट्रेलिया में अनिवार्य-सैनिक शिक्षा का प्रचार नहीं है। १९३८ ई० में तटीय रक्षा और विमान संहारिणी तोपों के लिये लगभग ५ करोड़ रुपया प्रदान किया गया था।

१९३७ ई० में आस्ट्रेलिया की हवाई सेना में १६२ विमान, २२७ अफसर और १८५३ हवाई सैनिक थे। १९३८ ई० में हवाई सेना की वृद्धि करने के लिये सरकार ने लगभग ५ करोड़ रूपया प्रदान किया था।

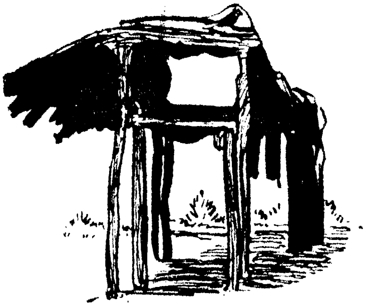
आस्ट्रेलिया की पुलिस को किसी प्रकार की सैनिक शिक्षा नहीं दी जाती है।

आस्ट्रेलिया में यह प्रयत्न किया जा रहा है कि वहां के कारखानों में वहां के प्रयोग के लिये अस्त्र-शस्त्र तयार हो सकें। इस कार्य के लिये कारखाने खोले जा रहे हैं। गैस आदि बनाने का काम भी कारखानों में आरम्भ कर दिया गया है। टस्मानिया के मज़दूर प्रधान मन्त्री के ज़ोर देने पर १९३९ ई० में आधुनिक युद्ध के आरम्भ में आस्ट्रेलिया में अनिवार्य सैनिक शिक्षा का आरम्भ हो गया है साथ ही साथ दिसम्बर १९३९ ई० में रक्षा प्रबन्ध के लिये और अधिक धन सरकार को ओर से प्रदान किया गया है। आस्ट्रेलिया ने प्रशान्त महासागर की स्थिति डांवाडोल देखकर पहले से ही लोहे का निर्यात रोक दिया था।

आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों के जीवन सम्बन्धी कुछ चित्र



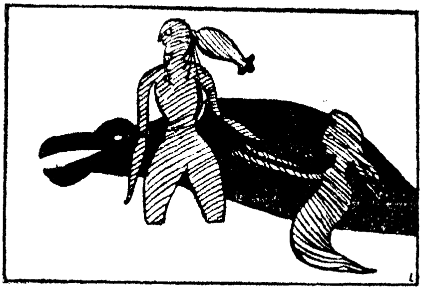
आस्ट्रेलिया के प्राचीन निवासियों का झोंपड़ा



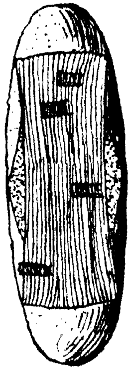
वीपा का दोतल्ला झोंपड़ा



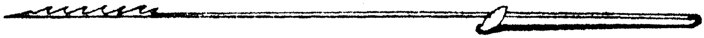
गुफा की एक शिल्पकारी का चित्र



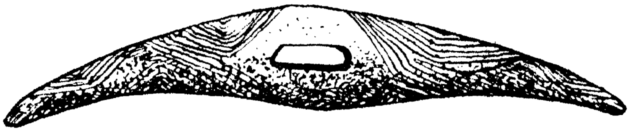
गुफा शिल्पकारी का एक सुन्दर चित्र



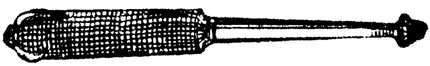
भाला की चोट रोकने वाली ढाल



ओमेरा सहित भाला।



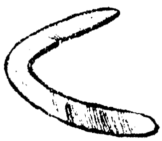
गदा द्वारा चोट रोकने वाली ढाल



एक बड़ा लम्बा गदा



प्राचीन नाव



बूमेयेरिंग (अस्त्र)

आस्ट्रेलिया की ऐतिहासिक तालिका

१५२२ ई०—पश्चिमी आस्ट्रेलिया को पुर्तगालियों ने देखा और कैरोलाइन द्वीप का पता लगाया।

१५३०—पश्चिमी आस्ट्रेलिया का तट स्पेन और पुर्तगाल के मानचित्रों में दिखाया गया।

१६१६—थियोरडोरिक हरटोग इंट्राच्ट नामक एक छोटे जहाज में आया और इंट्राच्ट की भूमि तथा डिर्क हर्टोग द्वीप और पश्चिमी आस्ट्रेलिया का पता लगाया। डच लोगों ने ऐडमिरैलिटी द्वीप का पता लगाया।

१६१८—ज़ोचेन ने अर्नहेम नामक डच जहाज में बैठकर अर्नहेमलैंड के तट का पता लगाया जो आस्ट्रेलिया के उत्तर में है।

१६१९—जान एडेलस पश्चिमी आस्ट्रेलिया के तट पर घूमा।

१६२२—लीवविन दक्षिणी-पश्चिमी आस्ट्रेलियन तट पर लीवविन अंतरीप की खोज की।

१६२७—डे नुइज़ ने आस्ट्रेलिया के दक्षिणी तट का भ्रमण किया।

१६२८—कार्पेंटीर ने कारपेंटीर नामक खाड़ी का पता लगाया।

१६४२—अबेल टस्मान ने वान डीमन्स लैंड की खोज की और दक्षिणी आस्ट्रेलियन तट होकर भ्रमण किया।

१६६५—आस्ट्रेलिया के पश्चिमी भाग का नाम डच लोगों ने नोवा हालैंडिया या न्यूहालैंड रक्खा। कैरोलाइन द्वीपों पर पुर्तगालियों ने अधिकार जमाया।

१६८८—आस्ट्रेलिया के उत्तरी-पश्चिमी तट के समीप डैम्पियर ने अपने नाम से एक द्वीपसमूह का नामकरण किया।

१६६५—खोये हुये डच जहाज की खोज में विलियम वालिंमग ने स्वाव नदी में चढ़ाव की ओर यात्रा की।

१६९९—डैम्पीर ने रोवेक नामक जहाज में आस्ट्रेलिया के उत्तरी-पश्चिमी तट की खोज की।

१७००—डैम्पीर न्यूगिनी के तट पर पहुँचा।

१७७०—प्वाइंट हिक को (जिसका नाम अब होवे अंतरीप है) इंडीवर जहाज में बैठकर हिक ने पता लगाया। कैप्टन कुक बाटनी बे और जैक्सन बन्दरगाह पर उतरा और जार्ज तृतीय नाम पर न्यू साउथ वेल्स पर अधिकार कर लिया।

१७८८—जैक्सन बन्दरगाह पर इँगलैंड से प्रथम कैदी पहुँचाये गये। लैफ्टिनेंट बुल ने लार्ड होवे द्वीपों का पता लगाया।

१७९०—पारामाता की नींव डाली गई।

१७९५—न्यू साउथ वेल्स का गवरनर कैप्टन हंटर बनाया गया और गुडहोप अंतरीप से भेड़ें आस्ट्रेलिया में पहुँचाई गईं।

१७९७—सर्जन बास ने टेस्मानिया को एक द्वीप सिद्ध किया।

१८०१—फिलिप बन्दरगाह का पता लगा।

१८०२—लैफ्टिनेंट फिलिन्डर्स ने आस्ट्रेलिया के दक्षिणी तट की खोज की।

१८०३—टेस्मानिया को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया और वहां बस्ती बसाई गई।

१८०६—कैप्टन ब्लाई न्यू साउथ वेल्स का गवरनर बना।

१८१०—मेजर-जनरल मात्वैरी न्यू साउथ वेल्स का गवरनर बना और बाथर्स्ट, कास्टलेरीघ, रिचमांड और विंडसर की नींव डाली गई।

१८१३—ब्लू पर्वतों पर एक सड़क बनाई गई।

१८१५—आक्सले ने लचलान नदी का पता लगाया।

१८१६—होबर्ट पर प्रथम बस्ती बसाने वाला जहाज पहुंचा।

१८२३—आक्सले ने ब्रिस्बाने नदी का पता लगाया।

१८२४—जनरल ब्रिस्बेन न्यू साउथ वेल्स का गवरनर बनाया गया और ६ सदस्यों की लैजिस्लेटिव कौन्सिल बनी। ब्रिस्बेन पर पेनल कालोनी स्थापित की गई। सिडनी से १० जहाज़ नाज और ऊन भरे हुये इँगलैंड के लिये रवाना किये गये।

१८२५—टेस्मानिया एक अलग कालोनी बनाई गई।

१८२६—कैदी स्वान नदी की बस्ती में भेजे गये। अलान कनिंघम ने डार्लिंग डाउन्स का पता लगाया।

१८२८—आस्ट्रेलिया की सफेद जन-संख्या ३६६०० हो गई।

१८२९—फ्रीमैंटिल और पर्थ में स्वान नदी की बस्ती बसाई गई। कैप्टन स्टुअर्ट ने मुरम्बजी, डार्लिङ्ग और मूरे नदियों के संगम का पता लगाया और मूरे नदी से होकर समुद्र तक यात्रा की।

१८३६—ब्रिटिश बस्ती बसाने वालों ने अडेलैडे की बुनियाद डाली।

१८३९—मैक मिलन ने जिप्स लैंड का पता लगाया और उसका नाम कलेडोनिया आस्ट्रेलिस रक्खा।

१८४०—लार्ड हावे द्वीप न्यूसाउथ वेल्स में मिलाया गया।

१८४२—मोरेटन जिला बस्ती बसाने के लिये खोला गया और जेलालडाइल नामक सीसे और तांबे की खान का काम आरम्भ हुआ।

१८४३—न्यू साउथ वेल्स को विधान प्रदान किया गया जिसकी सभा में ३६ सदस्य हुये। आस्ट्रेलिया के बैंक का दिवालिया हो गया।

१८४४—दक्षिणी आस्ट्रेलिया में कापुंडा और बुरा तांबे की खानों का पता लगा।

१८४६—न्यू साउथ वेल्स में रेलवे का बनना आरम्भ हुआ। सिडनी में विश्व विद्यालय और सिक्का बनाने की मिंट की एक शाखा खोली गई।

१८४७—टेस्मानिया को विधान दिया गया।

१८४८—स्वान-रीवर की बस्ती पेनल कालोनी बनी।

१८५१—न्यू साउथ वेल्स और पोर्ट फिलिप जिलों में सोने की खानों की खोज की गई जिस पर पोर्ट फिलिप का नाम विक्टोरिया रख कर उसे एक अलग उपनिवेश बनाया गया।

१८५३—वानडोमन्स लैण्ड का नाम बदल कर टेस्मानिया रक्खा गया।

१८५५—न्यूसाउथ वेल्स और टेस्मानिया में उत्तरदायी सरकारें स्थापित की गईं।

१८५६—दक्षिणी आस्ट्रेलिया में उत्तरदायी सरकार बनी।

१८५९—मोरेटन बे का नाम क्वीन्सलैंड रक्खा गया और वह एक अलग उपनिवेश बनाया गया वहां भी प्रजा को उत्तरदायी सरकार स्थापित की गई।

१८६०—वालारू तांबे की खान का पता लगा।

१८६२—कैप्टन स्टुअर्ट ने दक्षिण से उत्तर को आस्ट्रेलिया पार किया।

१८६७—टेस्मानिया में सोने की खोज हुई।

१८६८—ब्लू पर्वत पर टेढ़ी-मेढ़ी रेलवे बनाई गई और पश्चिमी आस्ट्रेलिया में सोने की खोज की गई।

१८६९—एडिन्ब्रा के ड्यूक ने आस्ट्रेलिया का भ्रमण किया।

१८७०—पश्चिमी आस्ट्रेलिया में कानून बनाने वाली सभा स्थापित की गई।

१८७३—अंतर्राष्ट्रीय तार लाइन बनाई गई।

१८८३—न्यूगिनी के दक्षिणी भाग को क्वीन्सलैंड की सरकार ने अपने साथ मिला लिया।

१८८४—न्यूगिनी की संरक्षता की घोषणा की गई।

१८८५—पश्चीमी आस्ट्रेलिया में कई स्थानों पर सोने की खानों की खोज की गई।

१८८९—टस्मानियन जाति के लोग लण्डन पहुंचाये गये।

१८९०—पश्चिमी आस्ट्रेलिया में प्रजा की उत्तरदायी सरकार स्थापित की गई।

१८९२—कूलगार्डी में सोने की एक बड़ी खान का पता लगा।

१८९३—काल्गूर्ली से सोना ले जाने के लिये लोग दौड़ पड़े।

१९०१—आस्ट्रेलिया की कामन वेल्थ सरकार स्थापित की गई।

१९०२—पापुवा की भूमि आस्ट्रेलियन कामन वेल्थ के हाथ सौंप दी गई।

१९१०—कनबेरा में संघ शासन की राजधानी के लिये स्थान चुना गया।

१९१४—आस्ट्रेलिया ने गत महायुद्ध में भाग लिया।

१९१९—आस्ट्रेलिया को राष्ट्र संघ ने मैंडेटेड द्वीपों पर अधिकार किया।

आस्ट्रेलिया के मूल निवासी



आस्ट्रेलिया का एक मूल निवासी



वीपा (उत्तरी क्वींसलैण्ड) का निवासी



नैपून का निवासी
